आजादी के 75वें वर्ष अमृत महोत्सव
के अवसर पर
वन विभाग हरियाणा की पहल

गीता उद्‌बोधन में प्रकृति संरक्षण

प्रचार एवं प्रशिक्षण, वन विभाग, हरियाणा

सरस
मेला
2021

अनुक्रमणिका

	विषय सूची	पृष्ठ सं.
संदेश	माननीय राज्यपाल महोदय श्री बंडारू दत्तात्रेय जी	3
संदेश	माननीय मुख्यमंत्री हरियाणा श्री मनोहर लाल जी	5
संदेश	माननीय वन एवं वन्य जीव मंत्री हरियाणा श्री कंवर पाल जी	7
संदेश	श्री संजीव कौशल, भा.प्र.से., मुख्य सचिव, हरियाणा	8
संदेश	श्री अपूर्व कुमार सिंह, भा.प्र.से., अतिरिक्त मुख्य सचिव, हरियाणा	9
संदेश	श्री जगदीश चन्द्र, भा.व.से., प्रधान मुख्य वन संरक्षक, वन विभाग, हरियाणा	10
संपादकीय	श्री जी. रमन, भा.व.से., मुख्य वन संरक्षक, हरियाणा	11
विरासत	श्री जगदीश चन्द्र, भा.व.से. प्रधान मुख्य वन संरक्षक, वन विभाग, हरियाणा	12
लेख	भगवद् गीता और पर्यावरण	16
लेख	भारतीय संस्कृति और पर्यावरण	19
लेख	आपके तालाब का क्या नाम है? अनुपम मिश्र	26
रिपोर्ट	9 से 14 दिसम्बर 2021, ब्रह्मसरोवर कुरूक्षेत्र	31–36
गतिविधियाँ	प्रचार एवं प्रशिक्षण, वन विभाग, हरियाणा	37–50
कविता	सतपुड़ा के जंगल	51
कविता	नीली चिड़ियाँ	52
कविता	बादल को घिरते देखा है	53
खबर	समाचार पत्रों की कतरन से...	54–55

प्रधान संपादक
जगदीश चन्द्र, भा.व.से
प्रधान मुख्य वन संरक्षक, हरियाणा

संपादक
जी. रमन, भा.व.से
मुख्य वन संरक्षक

गीता महोत्सव के अवसर पर कुरूक्षेत्र के ब्रह्मसरोवर के पावन तट पर मुख्य मंच से नागरिकों को संबोधित करते माननीय राज्यपाल महोदय श्री बंडारू दत्तात्रेय

माननीय राज्यपाल महोदय
सांध्यकालीन आरती करते हुए

मंचासीन माननीय राज्यपाल महोदय
एवं विशिष्टगण

माननीय राज्यपाल महोदय
सरस मेले का भ्रमण करते हुए

बंडारू दत्तात्रेय
राज्यपाल, हरियाणा

संदेश

यह अपार हर्ष का विषय है कि वन विभाग, हरियाणा द्वारा पर्यावरण संरक्षण विषय से सम्बन्धित पुस्तिका का विशेष प्रकाशन किया जा रहा है। वन एवं पर्यावरण संरक्षण के लिए विभाग का यह सराहनीय कदम है।

हरियाणा सरकार द्वारा कुरूक्षेत्र में ''आजादी के अमृत महोत्सव'' से सम्बन्धित कार्यक्रम आयोजित किया गया। इस महोत्सव के दौरान विभाग की गतिविधियों के प्रचार एवं प्रसार के उद्देश्य से अनेक कार्यक्रमों का आयोजन भी किया गया।

अन्तर्राष्ट्रीय गीता जयन्ती के अवसर पर कुरूक्षेत्र के पवित्र ब्रह्मसरोवर तट पर नई पीढ़ी को प्रकृति रक्षा का संदेश देने के लिए 9 से 14 दिसम्बर, 2021 को पुस्तक मेले का आयोजन भी सराहनीय पहल रही है।

वन हमारी प्राकृतिक सम्पदा तो है ही, साथ ही सांस्कृतिक धरोहर भी हैं। वर्तमान में जनसंख्या वृद्धि और औद्योगिक विकास के कारण वनों पर निरन्तर दबाव बढ़ता जा रहा है, इसलिए वनों को नष्ट होने से बचाना व इसका संवर्धन करना हम सभी का परम कर्तव्य है, साथ ही यह भी आवश्यक है कि हम वन क्षेत्र में वृद्धि करें और वनों व पौधों की गुणवत्ता की ओर अधिक ध्यान दें।

मुझे आशा है कि वन विभाग की गतिविधियों से प्रोत्साहित होकर नई पीढ़ी पर्यावरण प्रहरी वन कर कार्य करेगी, जिससे मानव जीवन रक्षक वन एवं पर्यावरण का संरक्षण होगा।

मैं, वन एवं पर्यावरण संरक्षण विषय पर पुस्तिका प्रकाशित करने के लिए वन विभाग की पूरी टीम को हार्दिक बधाई एवं शुभकामनाएँ देता हूँ।

बंडारू दत्तात्रेय

गीता महोत्सव के अवसर पर कुरूक्षेत्र के ब्रह्मसरोवर के पावन तट पर मुख्य मंच से आमजन को संबोधित करते माननीय मुख्यमंत्री श्री मनोहर लाल जी

माननीय मुख्यमंत्री श्री मनोहर लाल जी
दीप प्रज्वलित करते हुए

माननीय मुख्यमंत्री जी
ऑक्सी वन करनाल में पौधारोपण करते हुए

माननीय मुख्यमंत्री जी
सान्ध्यकालीन आरती करते हुए

मनोहर लाल
मुख्यमंत्री, हरियाणा

संदेश

हमारे धर्म ग्रन्थों में कहा गया है
"परहित सरसि धर्म नहीं भाई। परपीड़ा सम नहीं अधमाई।।"

अर्थात दूसरों का हित करने के बराबर कोई पुण्य नहीं तथा दूसरों को पीड़ा देने के बराबर कोई पाप नहीं।

धर्म और प्रकृति में गहरा सम्बन्ध है तथा सनातन धर्म में प्रकृति को ईश्वर का ही रूप माना गया है। पेड़–पौधे और वन्य जीव हमारी इस प्रकृति का अभिन्न अंग हैं। हमारी संस्कृति में बिना वजह पेड़–पौधे काटना और वन्य जीवों का वध करना पाप माना जाता है क्योंकि यह भी एक प्रकार से किसी का अहित करना ही है। इस प्रकार आदि काल से ही हमारी संस्कृति प्रकृति–संरक्षण प्रधान रही है।

प्रकृति मानव जाति के साथ–साथ वन्य जीवों को जीवन जीने का अवसर प्रदान करती है। लोगों को वन एव वन्य जीवों की रक्षा करने के लिए प्रेरित करके वृक्ष संस्कृति को पुनर्स्थापित करने के क्रम में वन विभाग द्वारा गीता महोत्सव के अवसर पर कुरूक्षेत्र के ब्रह्मसरोवर के पावन तट पर प्रकृति संरक्षण हेतु जन जागरूकता का किया गया प्रयास काफी सराहनीय है। यह हर्ष का विषय है कि वन विभाग द्वारा प्रकृति संरक्षण के लिए किये गये इन प्रयासों को आधार में रखकर एक पत्रिका का प्रकाशन किया जा रहा है जो कि एक सकारात्मक पहल है।

आशा है कि यह पत्रिका वन विभाग द्वारा प्रकृति संरक्षण के लिए किये जा रहे प्रयासों और चलाई जा रही योजनाओं एवं गतिविधियों को पाठकों तक पहुँचाने में सफल रहेगी। साथ ही, इसमें प्रकाशित सामग्री लोगों को प्रकृति संरक्षण के लिए प्रेरित करेगी।

मैं पत्रिका के सफल प्रकाशन के लिए अपनी शुभकामनाएँ देता हूँ।

मनोहर लाल

72वें वन महोत्सव के अवसर पर यमुनानगर में नागरिकों को संबोधित करते माननीय वन एवं वन्य जीव मंत्री श्री कंवर पाल जी

कुरुक्षेत्र ब्रह्मसरोवर के तट पर भ्रमण करते हुए माननीय वन एवं वन्य जीव मंत्री

माननीय वन एवं वन्य जीव मंत्री जी पीपल के पौधे की महत्ता बताते हुए

माननीय वन एवं वन्य जीव मंत्री जी धरोहर पुस्तिका का विमोचन करते हुए

कंवर पाल
वन एवं वन्य जीव मंत्री, हरियाणा

संदेश

आज समकालीन समय में पर्यावरण मुख्य मुद्दा बना हुआ है। कुरूक्षेत्र में ब्रह्मसरोवर के तट पर नागरिकों को पर्यावरण संरक्षण हेतु अभियान चलाना सराहनीय कदम है।

प्रकृति और मनुष्य सदा से ही एक दूसरे के पूरक हैं और एक के बिना दूसरे की कल्पना करना बेमानी है। वैदिक काल से ही 'सर्वे भवन्तु सुखिनः' की अवधारणा को साकार करने के लिए प्रकृति और मनुष्य एक दूसरे की सहायता करते रहे हैं और श्रीमद्भगवद्गीता तो प्रकृति संबर्धन का मंत्र है, प्रकृति के कण–कण में ईश्वर है। श्रीकृष्ण का सम्पूर्ण जीवन पेड़, पहाड़, नदी आदि के संरक्षण का संदेश देता है।

गीता में श्रीकृष्ण कहते हैं कि–

वृक्षों में मैं पीपल हूँ, ऋतुओं में बसन्त हूँ नदियों में गंगा हूँ तथा वनों में 'देहरूपकम' कहकर वृन्दावन को शरीर कहते हैं।

आज वन विभाग हरियाणा गीता के विचार से प्रभावित होकर प्रकृति रक्षा के लिए ज्ञान के सभी मंदिरों में प्रकृति ज्ञान केन्द्र की स्थापना की है। गीता जयंती महोत्सव के अवसर पर पुस्तक मेले के मंच पर 48 कोस के स्वयं सहायता समूहों और ज्ञान के मंदिरों के कार्यकर्ताओं को वृक्ष दूत बनाने की प्रेरणा देने का उत्सव दूरगामी परिणाम देगा।

इस प्रयास में सक्रिय सभी अधिकारियों, कर्मचारियों व कार्यकर्ताओं को विशेष शुभकामनाएं।

कंवर पाल

संजीव कौशल, भा.प्र.से
मुख्य सचिव, हरियाणा

संदेश

यह अति हर्ष का विषय है कि आजादी के 75वें अमृत महोत्सव के दौरान 9–14 दिसम्बर, 2021 तक कुरूक्षेत्र में गीता जयंती समारोह मनाया गया। कुरूक्षेत्र में ब्रह्मसरोवर के पवित्र तट पर इस दौरान प्रकृति संरक्षण से संबंधित जो विभिन्न गतिविधियाँ आयोजित की गई, वन विभाग द्वारा उनके निष्कर्ष को एक पत्रिका के रूप में प्रकाशित किया जा रहा है।

समकालीन समय में जलवायु परिवर्तन वैश्विक मुद्दा है। भारतीय संस्कृति में मानव के जीवन जीने की पद्धति धार्मिक, सांस्कृतिक व प्रकृति प्रेम पर आधारित है। हमारे प्राचीन ग्रन्थों में ऋषि–मुनियों ने वृक्षों के महत्व का बड़ा गुणगान किया है।

इधर, पिछले कई दशकों से घटते वन क्षेत्र ने हमारी चिंता को बढ़ाया है। धरती पर तापमान निरंतर बढ़ रहा है। पूरी दुनिया में पर्यावरण प्रदूषण चिंता का विषय है। वन ही एक ऐसा संसाधन है, जिसका पर्यावरण संरक्षण एवं संतुलन बनाए रखने में महत्वपूर्ण योगदान है।

प्रदेश की नयी पीढ़ी के मन–मस्तिष्क में प्रकृति रक्षा के संस्कार को रोपित करने का वन विभाग का यह प्रयास प्रशंसनीय है। मैं सभी से अपील करना चाहता हूँ कि वर्ष भर में जितनी भी गतिविधियाँ एवं उत्सव संयोजित किये जाते हैं, उन सभी अवसरों पर वृक्षारोपण की संस्कृति को न सिर्फ प्रचारित–प्रसारित करें बल्कि प्रकृति के श्रृंगार का उदाहरण प्रस्तुत करते हुए एक पौधा अवश्य लगायें।

मुझे आशा है कि वन विभाग, हरियाणा द्वारा प्रकाशित की जा रही पत्रिका लोगों को प्रकृति संरक्षण के लिए प्रेरित एवं प्रोत्साहित करेगी।

मैं पत्रिका के सफल प्रकाशन के लिए शुभकामनाएँ प्रेषित करता हूँ।

संजीव कौशल

अपूर्व कुमार सिंह, भा.प्र.से.

अतिरिक्त मुख्य सचिव, हरियाणा सरकार, वन तथा वन्यप्राणी विभाग

संदेश

पर्यावरण संरक्षण हमारे जीवन का अभिन्न अंग होना चाहिये। "अंहिसा परमो धर्मः" हमारी जीवन शैली का मूल आधार है तथा हम सभी जीवों पर दया दृष्टि रखने का संकल्प मंत्र मानते आये है। हमारा विश्वास है कि यदि हम सब ऐसा करते हैं तो प्राकृतिक संतुलन स्वतः स्थापित हो जाएगा। हमारे सामने दो विकल्प हैं या तो हम समय रहते अपनी धरती व सृष्टि को बचा लें या फिर व्यवहार के कारण अपने प्राकृतिक संसाधानों का ज्यादा से ज्यादा उपभोग करके उसे नष्ट कर दें तथा अपने आने वाली पीढ़ी के लिये एक ऐसी दुनिया छोड़ जाएं जहां सिर्फ सूरज की निर्मम गर्मी हो तथा पानी के लिए लोग एक दूसरे के साथ संघर्ष करें।

आज समय की सबसे बड़ी जरूरत है कि हम अपनी मूल संस्कृति व विचार धारा की तरफ लौटें जो प्रकृति को अपनी जननी तथा पर्यावरण को अपना सुरक्षा कवच मानती है।

वन विभाग हरियाणा द्वारा लोगों को जागरूक करने के लिए गीता महोत्सव के अवसर पर ब्रह्मसरोवर के तट पर जो पर्यावरण प्रदर्शनी, पदयात्रा, विमर्श, गोष्ठी और कार्यशाला का आयोजन किया गया, वह एक सराहनीय पहल है। वन विभाग हरियाणा द्वारा आमजन को पर्यावरण–प्रहरी बनाने हेतू यह प्रकाशन एक प्रशंसनीय प्रयास है। इस प्रयास से जुड़े सभी व्यक्तियों को हार्दिक शुभकामनाएँ।

अपूर्व कुमार सिंह

जगदीश चन्द्र, भा.व.से.
प्रधान मुख्य वन संरक्षक, वन विभाग, हरियाणा

संदेश

जीवन और पर्यावरण एक दूसरे पर निर्भर हैं। हमारे तन, मन की रचना, शक्ति और सामर्थ्य सब कुछ पर्यावरण से ही नियंत्रित होता है।

धर्मग्रन्थों में भी कहा गया है–

पर्यावरणनाशेन, नश्यन्ति सर्वजन्तवः। पवनः दुष्टतां याति, प्रकृतिर्विकृतायते।।

अर्थात पर्यावरण के प्रदूषित होने से सभी प्राणी नष्ट हो जाते हैं, हवा दुष्टता को प्राप्त होती है और प्रकृति विकृत हो जाती है।

माता भूमिः पुत्रेहं पृथ्व्याः ।।

वेदों में स्वयं को पुत्र तथा पृथ्वी को माता की संज्ञा दी गयी है, परन्तु आज धरती माता के जीवन और अस्तित्व पर सबसे बड़ा खतरा पर्यावरण प्रदूषण रूपी दानव से है और जब हम पर्यावरण प्रदूषण रूपी दानव को खत्म कर देंगे तभी अच्छे पुत्र की उपाधि प्राप्त कर सकेंगे। आज सबसे बड़ी आवश्यकता इस बात की है कि हम अपनी धरा को वृक्षों से, वन्य प्राणियों से, पर्वतों से, नदियों से सजाये–सवारें, तभी हम सच्चे अर्थो में पृथ्वी के आभूषण का रक्षक कहलायेंगे।

प्रचार एवं प्रशिक्षण प्रभाग, वन विभाग हरियाणा के सकारात्मक पहल के रूप में आम लोगों को जागृत करने हेतु कुरूक्षेत्र में ब्रह्मसरोवर के पवित्र तट पर की गयी कोशिश सराहनीय कदम है।

मैं आशा करता हूँ कि प्रकृति रक्षा का यह प्रयास लोगों को पर्यावरण संरक्षण के प्रति सचेत करेगा।

जगदीश चन्द्र

संपादकीय

वन विभाग हरियाणा का प्रचार एवं प्रशिक्षण विभाग निरन्तर जनजागरण के नये–नये प्रयोग करता रहा है। नाटक, फिल्म, प्रदर्शनी, कार्यशाला, जनसंवाद जैसी गतिविधियां स्वाभाविक पहल के रूप में नियमित रूप से जारी हैं। सक्रियता के नयी पहल के रूप में 9 से 14 दिसम्बर 2021 को ब्रह्मसरोवर के पवित्र तट पर गीता जयंती के अवसर पर 'प्रकृति रक्षा में साहित्य' थीम पर पुस्तक मेले का आयोजन, वन विभाग के प्रशिक्षुओं द्वारा प्रकृति रक्षा पदयात्रा, मेला परिसर में प्रतिदिन विद्यार्थियों के लिए कार्यशाला एवं जनसंवाद, 48 कोस परिक्षेत्र में सक्रिय महिला स्वयं सहायता समूहों का सम्मेलन, यह सारी गतिविधियां प्रकृति रक्षा के लिए नयी जीवन संस्कृति को रोपित और विकसित करने के लिए सकारात्मक पहल के रूप में दर्ज हुआ।

स्थानीय मीडिया ने प्रतिदिन आयोजित होने वाली गतिविधियों को प्रमुखता से प्रकाशित किया। भागीदारी निभाने वाले प्रत्येक विद्यार्थी/शिक्षक/नागरिक को पर्यावरण साहित्य से सम्मानित किया गया। यह पहल 'आओ लौट चलें प्रकृति की ओर' नारे की अन्तर्ध्वनि को आत्मसात करने जैसा था। इस पूरे आयोजन में उभरे विचार, रिपोर्ट एवं प्रकृति रक्षा में विरासत के रूप में समय–समय पर अभिव्यक्त पर्यावरण के विचारों को पत्रिका में प्रकाशित किया जा रहा है।

मुझे उम्मीद है कि प्रकृति रक्षा में यह प्रकाशन हरियाणा को वनाच्छादित बनाने में युवाओं/छात्रों को प्रेरित करेगा।

गीता जयन्ती के अवसर पर ब्रह्मसरोवर के तट पर आम जन को पर्यावरण संरक्षण हेतु जागृति करने का उद्देश्य आस्था और प्रकृति के माध्यम से नयी पीढ़ी को पर्यावरण प्रहरी बनाने के लिए प्रेरित करने का प्रयास है।

भगवान कृष्ण को आराध्य मानते हैं तो जाहिर है कि पर्यावरण को कभी नुकसान नहीं पहुंचा सकते, क्योंकि प्रकृति के कण–कण में ईश्वर है। स्वयं भगवान कृष्ण गीता में अर्जुन से कहते हैं कि हे पार्थ! मैं समूचे ब्रह्माण्ड में व्याप्त हूं। इस सृष्टि के समस्त पदार्थ मुझमें ऐसे जुड़े हैं जैसे हार के धागे में मोती पिराये हुए हैं, अर्थात पर्यावरण भी एक आभूषण है तथा वायु, जल, थल, वनस्पति आदि सभी तत्व मोती।

गीता महोत्सव के इस पावन तट पर लोगों को जागरूक करने का हमारा उद्देश्य है कि आमजन इस आभूषण के सौन्दर्य को खत्म न होने दें। यह पर्यावरण विशेषांक स्कूलों तथा कालेजों में वितरित किया जाएगा ताकि इसके अध्ययन से नागरिक तथा विद्यार्थी समाज पर्यावरण प्रहरी बनकर प्रकृति संरक्षण में सहयात्री की भूमिका निभायें।

जी. रमन, भा.व.से.
मुख्य वन संरक्षक
हरियाणा

विरासत

जगदीश चन्द्र, भा.व.से.
प्रधान मुख्य वन संरक्षक
वन एवं वन्य जीव विभाग, हरियाणा

भारतीय संस्कृति एक ऐसी संस्कृति है जिसकी मिशाल दुनिया में कही भी नहीं मिलती। हमारी संस्कृति सदा से ही ''अहिंसा परमोधर्म'' तथा ''जियो और जीने दो' की अवधारणा को अपने जीवन में आत्मसात करने की सीख देती है। यह सीख हमें मां के गोद से ही मिलना प्रारम्भ हो जाता है। दुनिया भर के लोग आज जीव–जंतु के संरक्षण की बात कर रहे हैं लेकिन वास्तव में देखा जाय तो हमारे लिए यह कोई नई बात नहीं है। हमारे ऋषि–मुनियों ने भी हमें जीव संरक्षण का उपदेश दिया था। यही उपदेश पीढ़ी दर पीढ़ी चल रही है आज भी हम अपने पीढ़ियों से अर्जित संस्कार को अपने आने वाली पीढ़ी तक पहुंचना अपना कर्तव्य समझते हैं। इस लेख के बहाने मैं इतिहास के पन्ने में दर्ज उस महाकथा/विरासत को आपसे रूबरू कराना चाहता हूं जो दुनिया भर के लोगों के लिए एक सीख है। यह कथा हरियाणा प्रदेश के जींद जनपद में पड़ने वाली ऐतिहासिक नगरी सफीदों की है जो धर्मक्षेत्र कुरूक्षेत्र से 48 कोस की परिधि का एक हिस्सा है।

यह स्थान इसी ऐतिहासिक नगरी सफीदो में पड़ता है। इस ऐतिहासिक स्थल को नागक्षेत्र के नाम से जाना जाता है। यह नागक्षेत्र एक तीर्थ स्थान है। इसी नागक्षेत्र में एक भव्य मंदिर है तथा मंदिर के पास एक विशाल सरोवर है इस सरोवर को 'पवित्र सरोवर' माना जाता है। इस स्थान पर दुनिया की पहली घटना घटी जो कि ऐतिहासिक तथा सामाजिक दृष्टि से बहुत ही अनूठी घटना है तथा इस घटना को जीव संरक्षण के इतिहास में दर्ज होनी चाहिए ताकि लोग जीव संरक्षण हेतु इस घटना से सीख ले सकें। यह प्रेरणादायक कहानी महाभारत काल की है।

महर्षि वेद व्यास रचित महाभारत भारतीय संस्कृति एवं इतिहास का प्रेरणादायक महाकाव्य है।

Copyright (salik.biz)

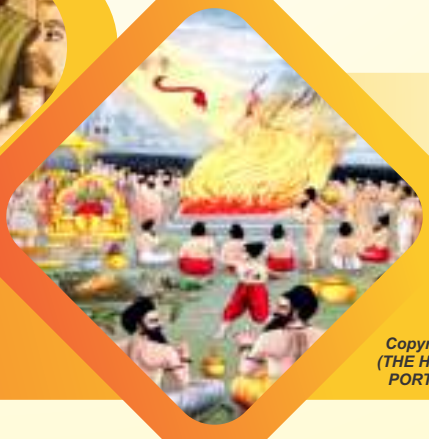
Copyright (THE HINDU PORTAL)

महाभारत प्राचीन भारत का सबसे बड़ा धार्मिक ग्रन्थ है। इस महाकाव्य में मुख्य रूप से पांच पाण्डवों (युधिष्ठिर, भीम, अर्जुन, नकुल, सहदेव) एवं कौरवों के गाथा को समेटे हुए है। अर्जुन एवं सुभद्रा के पुत्र अभिमन्यु– पौराणिक मान्यता के अनुसार अभिमन्यु को चन्द्र पुत्र वर्चस का अवतार माना जाता है।

ऐसा कहा जाता है कि जब अभिमन्यु सुभद्रा के गर्भ में थे तो पिता अर्जुन सुभद्रा को चक्रव्यूह भेदने की कथा सुना रहे थे लेकिन थकी होने के कारण सुभद्रा चक्रव्यूह से बाहर आने की कथा नहीं सुन पायी जिससे अभिमन्यु चक्रव्यूह से बाहर आने की कथा नहीं जान पाये।

गुरू द्रोणाचार्य के पुत्र अश्वथामा जिनके ब्रह्मास्त्र के प्रहार से अभिमन्यु और उत्तरा के पुत्र परीक्षित का जीवन संकट में पड़ गया था परन्तु श्रीकृष्ण के वरदान से वे पुनः पुनर्जीवित हो गये थे। यही अर्जुन के पौत्र एवं उत्तरा के पुत्र परीक्षित बाद में चलकर राजा परीक्षित हुए। जीव संरक्षण की कथा इन्हीं राजा परीक्षित से जुड़ी हुई है। कहा जाता है कि एक दिन राजा परीक्षित अपने महल में बहुत उदासी में थे। महल की चकाचौंध भी उन्हें उदासी से बाहर लाने में असफल थी। ऐसे में राजा परीक्षित शिकार पर चले गये। काफी देर चलने पर भी कोई शिकार नहीं कर पाये तभी उन्हें एक हिरण को देखा। उन्होंने हिरण का पीछा किया परन्तु वे शिकार नहीं कर पाये, लेकिन राजा परीक्षित कम हठी नहीं थे। वे हार नहीं माने और हिरण का पीछा करते रहे।

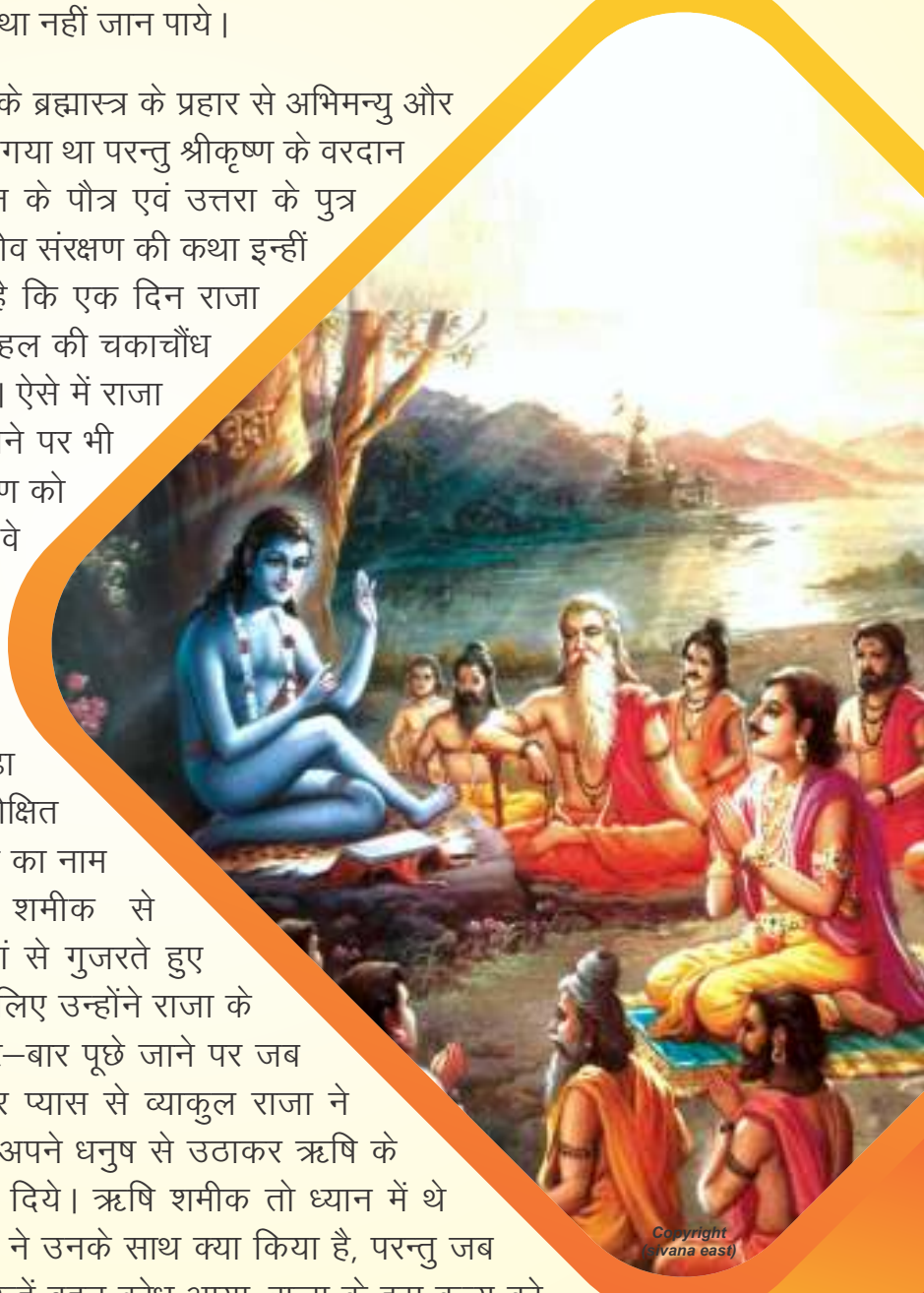

गर्मी का मौसम था, लू के थपेड़े कहर ढा रहे थे, भूख व प्यास से व्याकुल राजा परीक्षित आखिर में एक ऋषि के आश्रम में पहुंचे। ऋषि का नाम शमीक था, राजा परीक्षित ने ऋषि शमीक से पूछा–मान्यवर! ''आपने किसी हिरण को यहां से गुजरते हुए देखा है'' लेकिन ऋषि तपस्या में लीन थे इसलिए उन्होंने राजा के प्रश्न का कोई उत्तर नहीं दिया। राजा के बार–बार पूछे जाने पर जब ऋषि ने कोई जवाब नहीं दिया तो भूख और प्यास से व्याकुल राजा ने क्रोधित होकर पास ही पड़े एक मृत सर्प को अपने धनुष से उठाकर ऋषि के गले में डाल दिया और अपने नगर को चल दिये। ऋषि शमीक तो ध्यान में थे इसलिए उन्हें ज्ञात ही नहीं हो पाया कि राजा ने उनके साथ क्या किया है, परन्तु जब यह बात उनके पुत्र ऋषि श्रृंगी को चली तो उन्हें बहुत क्रोध आया, राजा के इस कृत्य को ब्राह्मणों का अपमान समझा और उन्होंने राजा को श्राप दिया कि जिसने भी यह घिनौनी हरकत की है उसे आज से सातवें दिन तक्षक सर्प डसेगा और वह सात दिन के अन्दर मर जाएगा।

परन्तु हमारी भारतीय संस्कृति और हमारे ऋषि–मुनियों की उदारता देखिये। ऋषि को जब इस घटना का पता चला तो उन्होंने श्राप की गंभीरता को देखते हुए राजा को अपने ऋषि कुमार द्वारा संदेश भिजवाया कि मेरे पुत्र ने आपको श्राप दिया है इसलिए सात दिन के अंदर तक्षक सर्प आपको डस लेगा।

कहा जाता है कि वह मृतक सर्प ही पुनजीर्वित होने पर तक्षक कहलाया। राजा ने ऋषि कुमार के द्वारा ऋषि शमीक को संदेश भिजवाया कि हम जैसे पापी को इसी तरह का दंड मिलना चाहिए। हम आभारी हैं कि आपने हम पर कृपा किया। उन्होंने अपने पुत्र जनमेजय का राज्याभिषेक कर सभी राजसी वस्त्राभूषणों को त्यागकर अपने जीवन के शेष सात दिन को ज्ञान प्राप्ति और भगवत्भक्ति में व्यतीत करने का संकल्प लिया। नियति को कौन टाल सकता है? एक दिन तक्षक सांप ने कीट के लारवा का रूप धारण कर फल–सब्जी की टोकरी में बैठकर राजा के महल में प्रवेश कर लिया और श्राप के कारण राजा परिक्षित को डस लिया जिसके चलते राजा की मृत्यु हो गयी।

अपने पिता की मृत्यु के कारण को जानकर राजा जनमेजय बहुत क्रोधित हुए, उन्होंने धरती से सर्पो का सर्वनाश करने का प्रण लिया। राजा जनमेजय ने सांपो के सर्वनाश हेतु ब्राह्मणों को 'सर्पदमन महायज्ञ' करने का आदेश दिया। राजा के आदेशानुसार विद्वान पंडितों ने नियत समय में 'सर्पदमन महायज्ञ' करना आरम्भ किया। कहा जाता है कि सांपो के सर्वनाश का यह महायज्ञ ऐतिहासिक और धार्मिक नगरी सफीदों के वर्तमान 'नागक्षेत्र' में हुआ था और इस यज्ञ की वेदी नागक्षेत्र के पवित्र सरोवर की तलहटी में रखी गयी थी। विद्वानों ने मंत्रोच्चारण आरंभ किया उनके विशिष्ट मंत्रों के कारण दुनिया भर के सभी सर्प अग्नि कुंड में आकर भस्म होने लगे। यह भी किवदन्ती है कि ब्राह्मणों के मंत्रोच्चारण के कारण हमारे त्रिदेव ब्रह्म, विष्णु तथा महेश का सिंहासन भी डोलने लगा था। जब लाखों–हजारों सर्प यज्ञ की अग्नि मे गिरने प्रारम्भ हो गये तब भयभीत तक्षक ने इन्द्र की शरण ली उधर जब पंडितों ने मंत्रोच्चारण कर 'ओ इंद्राज तक्षकाय स्वाहा' कहना आरंभ किया तो भगवान इंद्र स्वयं को असहाय महसूस करने लगे। उसी समय वासुकि की प्रेरणा से यज्ञ स्थल पर ब्राह्मण आस्तीक का आगमन हुआ।

हमारी संस्कृति जो हमेशा से 'अहिंसा परमोधर्म' का पालन करती है तथा जिसकी उदारता पहचान है वह अपने आप पर सर्पो के सर्वनाश का इतना बड़ा कलंक कैसे ले लेती। पौराणिक कथाओं के अनुसार महाभारत काल में मौजूद सांप कंदू के वंशज हैं जो पाताल वासी हैं। कंदू के निम्नलिखित सांप पुत्र प्राप्त हैं। वासुकी, तक्षक, कालिया, सुशेण, अनंत (शेश) कार्कोटक, पिंगल, शंकुफला, शंखचूपदम, महापदम व कहुक। तक्षक सांप कंदू के पुत्र और मुश्क सापों में से एक है लेकिन वासुकि नाग को नागराज के रूप में मान्यता प्राप्त है। नागराज वासुकि की बहन मनसा देवी जिसे धरती पर मनसा देवी के रूप में पूजा जाता है।

तक्षक के साथ क्या हुआ इससे पहले ब्राह्मण आस्तीक के बारे में जानना जरूरी हो जाता है। ब्राह्मण आस्तीक जरत्कारू दपत्ति की संतान थे। साहित्य के अध्ययन से यह पता चलता है कि जरत्कारू भगवान शंकर की पुत्री थी। वह स्वयं एक विद्वान थी और ज्ञान प्राप्ति हेतु उन्होंने कैलाश पर्वत पर वर्षो तक घोर तपस्या की। जरत्कारू का विवाह एक ऋषि से हुआ जिसका भी नाम जरत्कारू ही था। कहा जाता है कि जरत्कारू भी एक महान ऋषि थे और वंश को आगे बढ़ाने के उद्देश्य से ऋषि–मुनियों के आग्रह के कारण उन्हें विवाह करना पड़ा। इन्हीं दोनों की संतान ऋषि आस्तीक थे। बालक आस्तीक बचपन से ही तीव्र बुद्धि और मधुर वाणी के धनी थे।

यह भी कहा जाता है कि बालक आस्तीक की प्रारंभिक शिक्षा–दीक्षा भगवान शंकर ने दी। एक अन्य संन्दर्भ के अनुसार आस्तीक की शिक्षा–दीक्षा ऋषि च्यवनप्राश ने दी थी।

तक्षक के जीवन पर से अभी संकट टला नहीं था तथा और भी सांपों का अस्तित्व खतरे में था। नागराज वासुकि स्वयं भी मंत्रोच्चारण के तेज को सहन नहीं कर पा रहे थे, उन्होंने अपनी बहन जरत्कारू से सहायता मांगते हुए कहा कि हे बहन धरती से सांपों का अस्तित्व हमेशा के लिए मिट जाएगा। इससे हमारी संस्कृति पर हमेशा के लिए एक काला धब्बा लग जाएगा। तुम्ही हो जो इस समय सांपों को बचा सकती हो। तुम्हारा पुत्र आस्तीक ही हम सभी को इस संकट की घड़ी से बाहर निकाल सकता है। अपने पुत्र से कहो कि मानवता की भलाई के लिए सांप की रक्षा हेतु कुछ करे क्योंकि वही है जो इस विपदा की घड़ी में हम सबकी सहायता कर सकता है। भाई के अनुरोध को जरत्कारू टाल नहीं सकी। उन्होंने तुरंत अपने पुत्र को बुलाया तथा कहा कि हे पुत्र! राजा जनमेजय ने सांपों को इस धरती से सर्वनाश करने हेतु 'सर्पदमन महायज्ञ' किया है। सभी सांप महाअग्नि में भस्म होते जा रहे हैं। यदि सांप इस धरती से खत्म हो गये तो जो संस्कृति सदा से ही जीवों पर दया करने की रही है वह जीवों का नाश करने की संस्कृति बन जायेगी। अतः जाकर इस सर्वनाश को रोको।

मां की आज्ञा से ब्राह्मण आस्तीक परीक्षित के यज्ञस्थल पर पहुंचे और यजमान तथा ब्राह्मणों की स्तुति करने लगे। उनकी स्तुति से प्रसन्न होकर राजा जनमेजय ने उसे एक वरदान देने की इच्छा प्रकट की। ब्राह्मण आस्तीक बुद्धिमान तो थे ही, उन्होंने यज्ञ की तुरन्त समाप्ति का वरदान मांगा। पहले तो राजा जनमेजय यज्ञ समाप्ति के स्थान पर कोई और वर मांगने का अनुरोध किया परन्तु ब्राह्मण आस्तीक भी हठी थे। एक तरफ सर्पदमन का प्रण तथा दूसरी तरफ ब्राह्मण को दिया हुआ वचन। आखिरकार राजा को अपना वचन पूरा करना पड़ा और उन्होंने यज्ञ समाप्ति की घोषणा कर दी, जिस कारण तक्षक तथा बहुत से सांपों के जीवन की रक्षा हुई।

ब्राह्मण आस्तीक की बुद्धिमत्ता के कारण सांपों के जीवन की रक्षा हुई जिस कारण सभी सांप भाव–विभोर होकर बोले–''पुत्र आस्तीक! तुमने हमारे अस्तित्व को बचाया है, कहो– हम ऐसा क्या करें जिससे तुम्हें प्रसन्नता हो। आस्तीक ने कहा मैं आप सभी से यह वर मांगना चाहता हूं कि जो भी मनुष्य एकाग्रचित होकर जीव संरक्षण हेतु इस धर्ममय उपादान का पाठ करें उसे सांपों से कोई भय न हो। सांपों ने ऋषि आस्तीक की इच्छा पूरी होने का वरदान दिया। अतः माना जाता है कि जो भी ऋषि आस्तीक को याद करेगा उसे सांपों से कोई भय नहीं होगा। किवदन्ती है कि इसी घटना के कारण सफीदों नगरी का नाम पहले सर्पा देवी फिर सर्पदमन और बाद में चलकर सफीदो पड़ा। अतः भारतीय संस्कृति जो सदा अहिंसा में विश्वास रखती है वह हमें विरासत में ये सीख देती रही है कि ''जीयो और जीने दो''।

भगवद् गीता और पर्यावरण

भगवद् गीता संस्कृत भाषा का प्राचीन भारतीय ग्रन्थ है। इसमें 700 छंद समाविष्ट हैं। इसमें पांडव राजकुमार अर्जुन एवं उनके मार्गदर्शक एवं सारथी भगवान कृष्ण के बीच संवाद की वर्णनात्मक रूपरेखा दी गई है। भगवद् गीता में हमें संदेश दिया गया है कि हम पर्यावरण को बदलने का प्रयास न करें, इसमें सुधार लाने अथवा इसके साथ मल्ल युद्ध करने की कुचेष्टा न करें। यदि कभी वैमनस्य या विषमता दिखाई देती है तो पर्यावरण का आदर करते हुए इसके प्रति सहिष्णु रहें।

भगवान कृष्ण ने ईश्वर और सृष्टि के बीच संबंध दर्शाया है तथा हमें प्रेरित किया है कि हम मनुष्यों और प्रकृति के बीच सौहार्दपूर्ण संबंध बनाकर रखें। उन्होंने कहा है:–

''मेरे साथ यह ब्रह्माण्ड इस प्रकार पिरोया गया है, जैसे धागे में मोती। जल में मैं सुगंध हूँ, चाँद और सूरज में प्रकाश/ज्योति हूँ।'' यह अत्यंत महत्वपूर्ण गुण है कि परम सत्ता सभी पदार्थो में विराजमान है। जड़–चेतन सभी पदार्थो में दिव्यता विद्यमान है, अतः इससे हमें यह अभिप्रेरणा मिलती है कि प्रकृति को किसी प्रकार की हानि न पहुंचाई जाए क्योंकि सभी पदार्थो व अन्य पदार्थो के साथ एकीकृत नैतिक संबंध होता है।

भगवान कृष्ण यह भी कहते हैं:–

'पारितंत्र की रक्षा करें या फिर तबाह हो जाएं।'' भगवद् गीता का यह स्पष्ट एवं सटीक संदेश है। इस महान रचना के तीसरे अध्याय में कहा गया है कि पारितंत्र के परिरक्षण एवं योगदान के बिना जीवन निष्प्रयोजन या निरर्थक है, जिसका विलुप्त होना निश्चित है। अनेक सदियों पहले भगवान कृष्ण ने यह कहा था यदि हम इस संदेश के गूढ़ार्थ का विश्लेषण करते हैं तभी पर्यावरण की महत्ता समझ पायेंगे। यदि हम पर्यावरण की रक्षा नहीं करते तो मानव जाति नष्ट हो जाएगी। यदि हम पर्यावरण के ह्रास को नहीं रोक पाये, तथा हमारे समक्ष खड़े पर्यावरणीय संकट के बारे में कुछ नहीं कर पाये तो वह दिन दूर नहीं जब मानव जाति नष्ट हो जाएगी तथा पृथ्वी ग्रह से इसका नामोनिशां मिट जाएगा।

भगवान कृष्ण तथा अर्जुन के अन्य संवाद में भगवान कृष्ण ने कहा है:

''समस्त जीवित प्राणी खाद्यान पर टिके हैं, यह खाद्यान वर्षा पर निर्भर करता है। यज्ञ अनुष्ठान से वर्षा होती है। यज्ञ की विहित कर्मो से उत्पत्ति होती है। वेदों में नियमित कार्यकलापों का वर्णन किया गया है तथा वेद प्रत्यक्ष रूप से ईश्वर की परमसत्ता से प्रकट हुए हैं। परिणाम स्वरूप सर्वत्र विद्यमान ज्ञानातीत तत्व शाश्वत रूप में यज्ञ के कर्मो में अवस्थित हैं। प्रिय अर्जुन! यदि कोई व्यक्ति जीवन में यज्ञ अथवा त्याग के चक्र का अनुसरण नहीं करता तो वेदों ने यह सिद्ध किया है कि ऐसा जीवन पाप से भरा होता है। ऐन्द्रिक संतुष्टि के लिए जीवन जीने वाला व्यक्ति वास्तव में वृथा ही जीता है।''

भगवान कृष्ण ने प्रकृति के चक्र की स्पष्ट तस्वीर चित्रित की है। उन्होंने कहा कि प्रत्येक व्यक्ति को पर्यावरण के प्रति अपने नैतिक कर्तव्य का निर्वहन करना चाहिए। अन्यथा वह अधर्मी या पापी होता है। हम सभी जानते हैं कि जीवन विभिन्न प्रकार के अन्न पर टिका है। वर्षा अन्न उगाने में महत्वपूर्ण योगदान देती है । बादलों की सामयिक गति से बारिश होती है, यज्ञ की सहायता से बादल समय पर गतिशील होते हैं, प्राचीन रीति–रिवाजो, कर्मकाण्डों से यज्ञ किया जाता है, इन कर्मकाण्डों या अनुष्ठान से जुड़ी क्रियाएं या कर्म केवल ईश्वर से जुड़े हैं। वेदों में ईश्वर का रहस्य बताया गया है। वेद मानव मन में सुरक्षित रहते हैं। मानव मन का आहार से संपोषण होता है। इस चक्र से नैनोबी (जीवन का सबसे छोटा रूप, सूक्ष्मतम जीवाणु का 1/10 भाग) से लेकर मनुष्यों तक के जीवन के सभी रूपों के अस्तित्व कायम रहने में मद्‌द मिलती है। इस चक्र में जो योगदान नहीं देता, वह समस्त जीवन का नाशक माना जाता है।

भगवद्‌गीता में भगवान कृष्ण कहते हैं:–

''मैं समूचे ब्रह्मण्ड में व्याप्त हूँ।
इस सृष्टि के समस्त पदार्थ मुझमें ऐसे जुड़े हैं,
जैसे हार के धागे में मोती पिराए हुए हैं''

प्रकृति का विघ्वंसक इस जीवन का हंता है। अतः भगवान कृष्ण के दृष्टांत द्वारा समझाये गये चक्र की कड़ियों के बीच सूक्ष्म संतुलन को कायम रखना महत्वपूर्ण है।

यह संवाद पर्यावरण की रक्षा के प्रति हमारी नैतिक जिम्मेदारी के रूप में पर्यावरण नैतिकता को व्यवहार में लाने का उत्कृष्ट उदाहरण है।

भगवद् गीता तथा अन्य प्राचीन भारतीय साहित्य नैतिक दृष्टि से पर्यावरण के बहुत निकट हैं। इस प्राचीन ग्रन्थों में अनुयायियों से कहा गया है कि वे ब्रह्मण्ड या सृष्टि की प्रत्येक वस्तु में ईश्वर का रूप देखें। विशेष तौर पर वायु, जल, अग्नि, सूर्य, चांद, तारों एवं पृथ्वी की पूजा करने के लिए कहा गया है। पृथ्वी की पूजा की जाती है तथा पृथ्वी पर समस्त प्राणी ईश्वर एवं पृथ्वी की संतान माने गये हैं।

इसकी इस प्रकार से व्याख्या की जाती है कि ईश्वर समूचे ब्रह्मण्ड एवं प्रत्येक पदार्थ में विद्यमान है तथा प्रत्येक पदार्थ में इसका आभास होता है, चाहे जड़ हो या चेतन। उसकी विशिष्ट स्थिति आभूषण में जुड़े मोती के समान होती है। सबसे महत्वपूर्ण बात यह है कि यदि किसी आभूषण का एक भी मोती नष्ट हो जाता है या हटा लिया जाता है तो उस आभूषण की पहले जैसी शोभा नहीं रह पाती। यहां आभूषण हमारा पर्यावरण है तथा वायु, जल, थल, वनस्पति, पशु आदि तत्व मोती हैं। ये तत्व सूक्ष्म रूप में परस्पर जुड़े हैं। मनुष्य तथा प्रकृति के साथ मानव के क्रियाकलापों के कारण इस आभूषण का आकर्षण एवं सौन्दर्य क्षीण पड़ता जा रहा है। अतः विश्व के सर्वाधिक बहुमूल्य आभूषण अर्थात पर्यावरण के प्रति हमारा नैतिक दायित्व है कि हम इसकी रक्षा करें तथा इस आभूषण की पहुंची क्षति की पूर्ति करें। भगवद् गीता में कर्म का भी उपदेश दिया गया है। इसमें कहा गया है कि हमारी प्रत्येक क्रिया से नकारात्मक एवं सकारात्मक परिणाम सामने आते हैं। इनसे हमारे कर्म अपना रूप लेते हैं तथा हमारा भविष्य नियति सुनिश्चित होती है। पर्यावरण के संदर्भ में प्रकृति के प्रति हमारे कर्म यकीनन भावी पीढ़ियों पर चिरस्थायी प्रभाव डालेंगे।

पर्यावरण के प्रति हमारे व्यवहार के कार्मिक परिणाम सामने आते हैं। सद्‌व्यवहार से सद्‌कर्म की रचना होती है। हम स्वतंत्र रूप से निर्णय ले सकते हैं। भले ही हम अतीत में पर्यावरण को नुकसान पहुंचा चुके हैं, लेकिन हमें भविष्य के लिए पर्यावरण की रक्षा का नैतिक दायित्व चुनना है। नाशक कार्मिक पैटर्न की जगह अच्छे पैटर्न अपनाने हैं, जिनका पर्यावरण पर दुष्प्रभाव नहीं पड़े। निःसंदेह भगवद्‌गीता में पर्यावरण का सम्मान करने का संदेश दिया गया है। इस पवित्र पुस्तक के अनुसार प्रकृति की प्रत्येक वस्तु परम सत्ता की रचना है, जैसे हम उसकी रचना हैं। यह ईश्वर की प्रत्येक रचना की नैतिक जिम्मेदारी है कि वह अन्य रचनाओं का सम्मान करे क्योंकि जीवन के सभी रूपों में ईश्वर का सार तत्व है।

पर्यावरण नैतिकता किताब से साभार

भारतीय संस्कृति एवं पर्यावरण

''संस्कृति'' अथवा अंग्रेजी शब्द ''कल्चर'' का व्यापक अर्थ क्षेत्र है। इसमें परंपराएं, जीवन जीने का ढंग, नैतिक मूल्य तथा बैधता आदि समाहित हैं। इस प्रकार से हम कह सकते हैं कि संस्कृति मानव सभ्यता का जाना पहचाना संदर्भ है। यह कहा जाता है कि मनुष्य एक सामाजिक पशु है। इसलिए बुनियादी स्तर पर मनुष्य पशु ही है। चूंकि मनुष्य समाज में रहते हैं, इसलिए मनुष्यों को सामाजिक पशु कहा जाता है। अतएव मूलतः मनुष्य भी पशु है। हम मनुष्यों में पशुओं से मिलती–जुलती आदतें हैं। इनमें खाना, सोना तथा सहवास आदि शामिल हैं तथापि मुख्य अंतर बुद्धिमता एवं नैतिकता से जुड़ा है। मानव मन की दो स्थितियां या अवस्थाएं होती हैंः उच्च और निम्न। मन की निरन्तर अवस्था में क्रोध, लालच, काम वासना, मोह आदि विकार पाये जाते हैं तथा मनुष्य अधिकांश रूप में इसी अवस्था में रहते हैं। समाज द्वारा स्वीकार न किया गया तथाकथित अमानवीय व्यवहार इसी अवस्था के कारण दिखायी देता है। मनुष्यों ने प्रकृति के साथ खिलवाड़ करना शुरू कर दिया है। इसके कारण पर्यावरण का क्षरण हो रहा है। दूसरी ओर मन की उच्चतर अवस्था मन की निम्नतर अवस्था का विरोध करती है। यदि मन की उच्चतर अवस्था जीत जाती है तो मन संतुलित होने लगता है तथा मन की ऐसी अवस्था वाला व्यक्ति 'सुसंस्कृत' कहलाता है।

आज दुनिया भर के लोग पर्यावरण के ह्रास एवं इसके दुष्परिणामों को लेकर चिंतित हैं, तब वर्तमान एवं भावी पीढ़ियों के लिए प्रकृति के संरक्षण एवं सुरक्षा संबंधी पारंपरिक नैतिक मूल्य प्रेरणा का स्रोत होंगे एवं इन पीढ़ियों का मार्गदर्शन होगा।

शायद विश्व की किसी भी संस्कृति में भारतीय संस्कृति के समान प्राकृतिक परिपाटियों में गहन विभिन्नता एवं पारितंत्र की दृष्टि से प्रकृति के साथ गहरा संबंध नहीं पाया जाता। प्राचीन काल से ही भारत में प्रकृति के प्रति आदर एवं प्रेम की समृद्ध नैतिक परंपरा रही है। इस दिशा में सांस्कृतिक प्रवचनों, नैतिक प्रवचनों, नैतिक परंपराओं एवं रीति रिवाजों ने महत्वपूर्ण भूमिका निभाई है। भारतीय संस्कृति में युग–युगान्तर से पर्यावरण के संरक्षण एवं रक्षा का समर्थन एवं प्रचार–प्रसार किया जाता रहा है। भारतीय संस्कृति में प्रकृति को पवित्र माना गया है इसलिए हमारा नैतिक कर्तव्य है कि प्रकृति को संजोकर रखा जाए।

भारतीय सांस्कृतिक परंपराएं एवं पर्यावरण

भारतवासियों के लिए पर्यावरण की रक्षा एवं संरक्षण कोई नई अवधारणा नहीं है। भारतीय प्राचीन पद्धति रही है कि अनेक पर्यावरणीय समस्याओं को हल करने के लिए पर्यावरण से जुड़े नैतिक मूल्यों को व्यवहार में लाया जाए। ऐतिहासिक दृष्टि से प्रकृति एवं वन्य जीवन की रक्षा पूरे मन से की जाती रही है। यह नैतिक विश्वास, धारणा ऐसी परिपाटी के रूप में दिखाई देती है, जो प्राचीन काल में लोगों के दैनिक जीवन में परिलक्षित

होती रही। यह परिपाटी पौराणिक कथाओं, उपदेशों, कलाओं, परंपराओं एवं संस्कृति में गुम्फित है। पारितंत्र में जुड़े कुछ मूलभूत सिद्धान्तों– समग्र जीवन में अंतःसंबंध एवं परस्पर निर्भरता को भारतीय लोकाचारों में मूर्त रूप दिया गया है तथा प्राचीन धर्मग्रन्थ, इशोपनिषद् में यह प्रवृत्ति परिलक्षित होती है। इसे भारतीयों ने अपनी संस्कृति में समाविष्ट किया है। इसके पहले मंत्र में कहा गया है:

ऊँ ईशावास्यमिदंसर्वयत्किञ्चजगातंजगत।
तेनत्यक्तेनभुञ्जीथामागृधःकस्यस्विद्धनम।।

ईश्वर ने सभी जड़ एवं चेतन पदार्थो के कल्याण हेतु इस सृष्टि की रचना की है (इन प्राणियों या पदार्थो में अजन्में जड़–चेतन पदार्थ भी शामिल हैं) इसलिए जीवन के प्रत्येक रूप को सीखना है कि अन्य प्रजातियों के साथ मिलकर इस पूरी व्यवस्था के भाग रूप में परम शक्ति के वरदान का उपभोग किया जाए। कोई एक प्रजाति अन्य प्रजाति के अधिकारों का उल्लंघन न करें।

इशोपनिषद् का यह मंत्र हमें निर्देश देता है कि हम नैतिक मूल्यों का ध्यान रखते हुए संतुष्ट होकर जीवन बिताएं। इसमें कहा गया है कि व्यक्ति को दूसरों के बारे में तथा उनकी समृद्धि को लेकर लालच या ईर्ष्या भाव से बचने का प्रयास करना चाहिए। जब कभी मनुष्य उपभोग की लालसा करते हैं या अति दोहन का पैटर्न अपनाते हैं तब हम आवश्यकता से अधिक बटोरना शुरू कर देते हैं। ऐसा ही एक कृत्य प्रकृति के प्रति हिंसा है। इसे कदापि न्यायोचित नहीं ठहराया जा सकता।

मध्य भारत में भीमबेटका की 10,000 वर्ष प्राचीन गुफाओं में मानव प्रेम, स्नेह तथा प्रकृति के प्रति आदर भाव प्राचीन चित्रों में साकार रूप में देखे जा सकते हैं। इन चित्रों में पशु–पक्षी, पेड़–पौधे एवं मनुष्य सभी प्राणी परस्पर मिलजुल कर रहते दिखाए गये हैं। ऐतिहासिक दृष्टि से प्रकृति एवं प्राकृतिक संसाधनों का संरक्षण भारतीय नीतिशास्त्र का अंतर्जात पहलू रहा तथा यह विभिन्न धार्मिक कर्मकाण्डों, लोक जीवन, उपदेशों, तथा संस्कृति में परिलक्षित होता रहा। यह लोगों के दैनिक जीवन में प्रत्येक पहलू में विद्यमान है। भारतीय उप महाद्वीप में फले–फूले अधिकांश धर्मो के ग्रंन्थों एवं उपदेशों में प्रकृति को अधिक महत्व दिया गया है तथा इसे पर्यावरणीय संरक्षण से जोड़ा गया है। हिंदू धर्म, बौद्ध धर्म, जैन धर्म, ईसाई धर्म, इस्लाम धर्म तथा अन्य धर्मो में नैतिक मूल्यों, सदाचार, विश्वास एवं अभिवृत्ति पर अधिक बल

दिया गया है। ये प्रकृति के प्रति आदर भाव की सभी संस्कृतियों में सार्वभौमिकता तथा सृष्टि के अंतर्भूत भाग से जुड़े अनिवार्य तत्वों से संबंद्ध है।

प्रकृति के प्रति पाप कर्म की अवधारणा (अर्थात पर्यावरण ह्रास तथा दुरूपयोग) विभिन्न सांस्कृतिक व्यवस्थाओं में विद्यमान है। आदिकालीन भारतीय संस्कृति में पर्यावरण के साथ तालमेल रखते हुए नैतिक महत्व दर्शाया गया है। अनेक प्राचीन रीति–रिवाज आज आधुनिक समाज में निरर्थक एवं मात्र अंधविश्वास प्रतीत होते हैं लेकिन ये प्रकृति के साथ मानव के सहज साहचर्य को संजोकर रखने की पारंपरिक रणनीतियां हैं। पेड़ों की पूजा, पशुओं, वनों, नदियों तथा सूर्य की आराधना, पृथ्वी को देवी मां समझना–भारतीय परंपरा का भाग रहा है।

प्राचीन भारतीय संस्कृति में पेड़ों का महत्व

प्राचीन भारतीय संस्कृति में पेड़ों को हमेशा अत्यधिक महत्व दिया जाता रहा है। पेड़–पौधों को सजीव प्राणी माना जाता था। इन्हें नुकसान पहुंचाना पाप समझा जाता था। प्राचीन ग्रन्थों में पेड़ों की चमत्कारिक शक्तियों के अनेक उल्लेख मिलते हैं, जैसे कल्पवृक्ष एवं पारिजात। पद्‌म जैसे पुष्प एवं वटवृक्ष जैसे पेड़ तथा पलाश को विशेष महत्व दिया गया है। पीपल के पेड़ (बोधिवृक्ष/अश्वत्थ) की पूजा लोक रीति बन चुकी है।

ब्रह्म पुराण में पीपल को 'वृक्ष राज' माना गया है। विभिन्न समुदायों में अनेक पेड़ पौधे पवित्र माने गये हैं। पीपल, बरगद तथा खेजड़ी का पारंपरिक रूप से आदर किया जाता है तथा इसीलिए इन्हें कभी नहीं काटा जाता। अन्य अनेक पेड़–पौधों को पवित्र माना जाता है तथा इन्हें मंदिरों के प्रांगण में उगाया जाता है और अन्य इलाकों से, क्षेत्रों से बचाकर रखा जाता है। भारत में विभिन्न समुदाय तथा धर्म में सौ से अधिक पेड़–पौधों की प्रजातियों को पवित्र मानते हैं तथा इनकी रक्षा करते हैं। इनमें चंदन के वृक्ष, सुपारी, खजूर, नीम, नारियल, धूप चंदन, चंपा, कमल, तुलसी, काली मिर्च आदि शामिल हैं।

भले ही नैतिकता एवं धार्मिक विश्वास के कारण ऐसा होता है, परंतु भारत में पेड़–पौधों की विभिन्न प्रजातियों का संरक्षण एवं प्रचार–प्रसार में पारंपरिक सांस्कृतिक अभिवृत्तियों ने महत्वपूर्ण योगदान दिया है। अंततः विश्लेषण करते हुए कहा जा सकता है कि यह जैव विविधता के संरक्षण की विजय है, पारंपरिक परिपाटियों का शुक्रिया।

प्राचीन भारतीय संस्कृति में पर्यावरण के संरक्षण से संबंधित नैतिक सूक्तियां

प्राचीन संस्कृत ग्रन्थ मनुस्मृति (मनु संहिता रूप में ज्ञात या मनु की अविस्मरणीय परंपरा रूप में ज्ञात) प्राचीन भारतीय सांस्कृतिक एवं धार्मिक संहिता की सर्वाधिक प्रामाणिक पुस्तकों में से एक है। मनु स्मृति इस रचना का लोकप्रिय नाम है। आधिकारिक रूप में इसे ''मानव धर्म शास्त्र' रूप में जाना जाता है। इसमें पर्यावरण के प्रति सदाचार से संबंधित नियमों के रूप में विभिन्न मंत्र दिए गए हैं। अनेक सदियों पहले भारतीय संस्कृति में इन्हें व्यवहार में लाया जाता था। मनुस्मृति में वर्णित पर्यावरणीय संरक्षण एवं परिरक्षण से संबंधित नैतिक नियमों में बताया गया है कि प्राचीन काल में भी भारतीय संस्कृति पर्यावरण ह्रास की समस्या से अवगत थी तथा लोग सतर्क थे। इस चुनौती का सामना करने के लिए अनेक कदम उठाये गए। इनमें से कुछ सूक्तियां इस प्रकार हैः

वायु प्रदूषणः

1. अशुद्ध या अपवित्र पदार्थ अग्नि में मत डाले। इससे उत्पन्न धुआं बिषैला हो सकता है।
2. शव दहन से निकलते धुएं से बचना चाहिए। ऐसी जगह पर सांस न ले।
3. कभी भी सोने के कमरे में आग न जलाकर रखे, ताकि CO_2 और CO प्रदूषण से बचा जा सके।
4. फूंक मारकर आग न जलाएं। उठता हुआ धुआं एवं उड़ती हुई राख हमारी श्वास नली में प्रवेश कर सकती है।
5. रात के समय किसी निर्जन मकान में या पेड़ के नीचे सोने से बचना चाहिए। थमी हुई मंद वायु सांस लेने के लिए सही नहीं होती।

जल प्रदूषणः

1 मूत्र, विष्ठा या मल, थूक, अशुद्ध या अपवित्र वस्त्र, रक्त, जहरीली वस्तुएं तथा ऐसा अपवित्र समझा जाने वाला कोई अन्य पदार्थ पानी में न फेंका जाए।

2 यदि कोई मनुष्य पानी के भीतर/ऊपर वर्णित कोई गंदा पदार्थ फेकता है या ऐसा कोई कार्य करता है तो उसे एक माह तक भिक्षाटन से अपना पेट भरना चाहिए तथा इंद्र जैसे देवताओं के लिए सात छंदों/मंत्रों का उच्चारण करना चाहिए।

3 आपात स्थिति में (जाने–अनजाने) यदि इतनी ज्यादा जरूरत हो कि स्वयं पर काबू रखना मुश्किल हो जाए, तो उपवास करें।

4 सामान्य तौर पर बहते पानी को निर्मल माना जाता है, लेकिन स्वच्छ भूमि से अल्पपोशी तक एकत्रित गंध, वर्ण, स्वाद एवं गंदगी से मुक्त पानी शुद्ध जल माना जाता है।

कचरे का निपटानः

बाल, राख, हड्डियां, ठीकरे, बिनौले तथा कूड़ा करकट सार्वजनिक स्थानों पर न फेका जाय, इन पर पांव रखने से बचना चाहिए।

मूत्र, दुर्गंध, पैर धोते समय बहता गंदा पानी, प्रयुक्त पानी तथा बचा खुचा भोजन निवास स्थान से दूर फेका जाए।

पवित्र वाटिकाएंः प्राचीन भारत की परंपरा

पवित्र वृक्ष कुंज प्राचीन भारतीय संस्कृति का हिस्सा रहे हैं। अभी भी कुछ लोगों एवं आदिवासी समुदायों में यह परंपरा विद्यमान है। इन वाटिकाओं में पेड़ों का झुरमुट शामिल होता है या भूमि के कुछ हिस्से अथवा वन आदि शामिल होते हैं। जब मूलवासी गांव या कस्बा बसाने के लिए वन काट रहे थे तब ऐसे स्थलों को नहीं छुआ था। ऐसी वाटिकाएं देवी–देवताओं या आत्माओं के घर माने जाते थे। इसलिए नैतिक पक्षो पर ध्यान दिया जाता था अर्थात पाप–पुण्य का विधान लागू होता था। इनकी बड़े ध्यान से रखवाली की जाती थी।

नैतिक दृष्टि से भारतीय संस्कृति में पर्यावरण का प्राधान्य

प्राचीन भारतीय शास्त्रों में धरती को मां माना है जिसने हमें जन्म दिया है तथा जो हमारे जीवन के प्रत्येक क्षेत्र की जरूरतें पूरी करती है। वेदों में पृथ्वी को बहुत उदार एवं दयालु माँ के रूप में चित्रित किया गया है, जो हमें सभी आवश्यक भौतिक पदार्थ प्रदान करती है।

ऋग्वेद मुख्यतः प्रकृति की आराधना से जुड़ा है। इसमें बताया गया है कि प्रकृति की पूजा–अर्चना की जानी चाहिए न कि इस पर विजय पाने का प्रयास किया जाना चाहिए। पर्यावरण की रक्षा करके यह पूजा बड़ी सुगमता से की जा सकती है। वस्तुतः पर्यावरण की सुरक्षा मानव जाति की रक्षा है।

इसी कारण से भारतीय संस्कृति में प्रकृति का आदर करने की शिक्षा दी गई है। यह मूल्य व्यवस्था वैदिक काल से सिंधु घाटी की सभ्यता के काल तक फैली रही। प्राचीन काल में भारतवासी प्रकृति को दोहन का संसाधन कदापि नहीं मानते थे। हमेशा प्रकृति को उत्तरजीविता, भरणपोषण का स्रोत समझा गया। प्रकृति हमारी खुशी, उल्लास, सुख का आधार रही, साथ ही इसे ऐसी व्यवस्था माना जाता रहा जिसका मनुष्य अभिन्न अंग है।

भारतीय संस्कृति में यह कहा गया है कि प्रकृति द्वारा उपलब्ध समस्त पदार्थ, हमारे जीवन के लिए अनिवार्य है। यदि प्रकृति अपने तरीके से विकसित नहीं होती तो इस पृथ्वी पर जीवन का लेश मात्र भी नहीं रहेगा या जीवन अलग रूप ले लेगा। अतः पर्वत, नदियां, महासागर, पशु तथा पेड़–पौधे पवित्र हैं।

इन्हें अपवित्र नहीं किया जाए। इसका उपयोग किया जाए लेकिन करूणा भाव के साथ तथा समस्त प्राणी जगत को कोई नुकसान न पहुंचे। यह धार्मिक विश्वास सदियों से चला आ रहा है कि बहुमूल्य पदार्थ सागर से उत्पन्न हुए हैं, हिमालय पर्वत शिव का धाम है, गंगा जल पवित्र एवं शुद्ध हैं। आज तक लाखों लोगों का गंगा मैया उद्धार कर रही हैं, गाय को पवित्र माना गया है। इन सभी धार्मिक विचारों का दार्शनिक आधार है। हिन्दू शास्त्रों में कहा गया है कि ईश्वर ने स्वयं आकर धरती पर पशु रूप धारण किया है या पशु रूप में भी अवतार लिया है। विष्णु ने मत्स्य अवतार लिया, नरसिंह अवतार लिया, गणेश जी की समूचे भारत में पूजा होती है, इनका शीश हाथी का है इसलिए इन्हें गजानन भी कहा जाता है। लगभग सभी देवी–देवताओं का वाहन पशु हैं। पेड़ों को विशेष महत्व दिया गया है क्योंकि वे फलों, दवाओं तथा ऑक्सीजन का स्रोत हैं। कल्पवृक्ष एवं कामधेनु की अवधारणाएं प्रकृति एवं जीवन के प्रति हमारे मूल्य चित्रित करती हैं।

यह कहना अज्ञानता को प्रदर्शित करता है कि सभी आदिकालीन समाजों का प्रकृति के प्रति समान दृष्टिकोण रहा है तथा आधुनिक वैज्ञानिक जगत ऐसे विचारों के बल पर तरक्की नहीं कर सकता। ऐसी सोच इन परंपराओं के मूल में निहित ज्ञान को नहीं समझ पा रही। आधुनिक मनुष्य अपनी प्रोद्योगिकीय एवं वैज्ञानिक उपलब्धियों पर गर्व अनुभव करता है। वह ऐसी विधियां तथा प्रक्रम विकसित करने का प्रयास कर रहा है जो प्रकृति के रहस्यों को अनावृत्त कर सकें तथा प्राप्त ज्ञान का इस पर काबू पाने में इस्तेमाल किया जा सके। इस प्रकार से उच्चतर उत्पादकता हो एवं ऐसे उपभोक्ता सामान की व्यापक रेंज सुनिश्चित की जा सकें, जो सामान पहले था ही नहीं। लेकिन प्रकृति पर नियंत्रण पाने का कोई प्रयास केवल अल्पकाल तक सफल होगा। आगे चलकर प्रकृति के एकीकरण एवं संतुलन संबंधी कुछ नियमों द्वारा चलती है, जिसे वेदों में 'ऋता' कहा गया है।

भारतीय संस्कृति में बुनियादी तौर पर इस पर महत्व दिया गया है कि मानव मूल्यों के प्रति जागरूकता आए, अमानवीय प्रवृत्तियों से बचा जाए। विश्व की सभी रचनाएं चाहे जड़ होया चेतन, समान दृष्टि से देखा जाए तथा किसी प्रकार का पूर्वाग्रह या पक्षपात न बरता जाए। यदि मनुष्य सभी प्राणियों में तथा पेड़ों में भी ईश्वर के दर्शन करता है तो वह जीवन के किसी भी रूप को नष्ट नहीं करेगा तथा पृथ्वी पर किसी प्रकार से भी दुर्व्यवहार नहीं करेगा। वह हर पदार्थ का आदर करेगा, चाहे सजीव हो या निर्जीव। वह समझदारी एवं किफायत से प्राकृतिक संसाधनों का उपयोग करेगा, जरूरत के मुताबिक लेगा, वह प्रकृति को उजाड़ेगा नहीं।

त्याग की भावना से वस्तुओं का इस्तेमाल करें, उपयोग के लिए वस्तुओं का त्याग करना सीखें। पर्यावरण के प्रति भारतीय संस्कृति का यह मुख्य नारा है। मेरा विश्वास है कि भारतीय सांस्कृतिक परिपाटियां एवं परंपराओं की सुदृढ़ आधारशिला है। यह प्रकृति की रक्षा से जुड़े विज्ञान पर टिकी है। विश्व द्वारा इसे समझने की जरूरत है। जब तक प्राचीन भारतीय संस्कृति तथा दर्शन पर आधारित नैतिक जीवनशैली को नहीं अपनाया जाता तब तक पर्यावरणीय समस्याओं का हल ढूंढना भ्रम ही रहेगा।

पर्यावरण नैतिकता किताब से साभार

आपके तालाब का क्या नाम है?

सबको तालाब से जोड़कर देखने के लिए समाज में कुछ मान्यताएं रही हैं। अमावस और पूर्णिमा को अच्छे कारज का दिन माना गया है। इन दो दिनों में सबके हित के काम करने का विधान रहा है। किसान अमावस और पूनों के दिन अपने खेत में काम नहीं करते थे। इस समय का उपयोग वे अपने इलाके के तालाब की देख–रेख और मरम्मत में करते थे। समाज में आखिर मेहनत भी तो पूंजी ही है। वे इस पूंजी को निजी हित के साथ सार्वजनिक हित में भी लगाते थे। साल की बारह पूर्णिमाओं में से ग्यारह को श्रमदान के लिये रखा जाता रहा है। पूस महीने की पूनों के दिन तालाब के लिए धान और पैसा इकट्‌ठा करने की परंपरा रही है। हरेक घर अपनी भक्ति के अनुसार धान का दान करता है। जमा किया गया धन ग्राम कोश में रखा जाता है। इसी कोश से तालाब की मरम्मत की जाती है। सुख और दुख का साथी तालाब सबके काम आता है।

जो समाज को जीवन दे, उसे निर्जीव कैसे माना जा सकता है? तालाबों में, जल स्रोत में जीवन माना गया और समाज ने उनके चारों ओर अपने जीवन को रचा। जिसके साथ जितना निकट का संबंध, जितना स्नेह, मन उसके उतने ही नाम रख लेता है। देश के अलग–अलग राज्यों में, भाषाओं में, बोलियों में तालाब के कई नाम हैं। बोलियों के कोश में, उनके व्याकरण के ग्रन्थों में, पर्यायवाची शब्दों में तालाब के कई नामों को एक भरा पूरा परिवार देखने को मिलता है। डिंगल भाषा के व्याकरण का एक ग्रन्थ हमीर नाम माला तालाबों के पर्यायवाची नाम तो गिनाता ही है, साथ ही उनके स्वभाव का भी वर्णन करते हुए तालाबों को 'धरम सुभाव' कहता है।

लोक धरम सुभाव से जुड़ जाता है। प्रसंग सुख का हो तो तालाब बन जाएगा। प्रसंग दुख का भी हो तो तालाब बन जाएगा। जैसलमेर, बाड़मेर में परिवार में साधन कम हो, पूरा तालाब बनाने की गुंजाइश न हो तो उन सीमित साधनों का उपयोग पहले से बने किसी तालाब की पाल पर मिट्‌टी डालने, छोटी–मोटी मरम्मत करने में होता था। मृत्यु किस परिवार में नहीं आती? हर परिवार अपने दुखद प्रसंग को समाज के सुख के लिए तालाब से जोड़ देता था।

पूरे समाज पर दुख आता, अकाल पड़ता तब भी तालाब बनाने का काम होता। लोगों को तात्कालिक राहत मिलती और पानी का इंतजाम होने के बाद में फिर कभी ना आ सकने वाले इस दुख को सह सकने की शक्ति समाज में बनती थी। बिहार के मधुबनी इलाके में छठवीं सदी में आए एक बड़े अकाल के समय पूरे क्षेत्र के गांवों ने मिलकर 63 तालाब बनाये थे। इतनी बड़ी योजना बनाने से लेकर उसे पूरी करने तक के लिए कितना बड़ा संगठन बना होगा, जितने साधन जुटाए गये होंगे—उतने लोग—नयी सामाजिक और राजनैतिक संस्थाएं इसे सोचकर तो देखें। मधुबनी में ये तालाब आज भी हैं और लोग इन्हें आज भी कृतज्ञता से याद करते हैं।

कहीं पुरस्कार की तरह तालाब बना दिया जाता तो कही तालाब बनाने का पुरस्कार मिलता। गोंड राजाओं की सीमा में जो भी तालाब बनाता उसे उसके नीचे की जमीन का लगान नहीं देना पड़ता था। सबलपुर क्षेत्र में यह प्रथा विशेष रूप से मिलती थी। दंड विधान में भी तालाब मिलता है। बुंदेलखंड में जातीय पंचायतें अपने किसी सदस्य की अक्षम्य गलती पर जब दंड देती थी तो उसे दंड में प्रायः तालाब बनाने के लिए कहती थी। यह परंपरा आज भी राजस्थान में मिलती है। अलवर जिले के एक छोटे गांव गोपालपुरा में पंचायती फैसलों को न मानने की गलती करने वालों को दंड स्वरूप कुछ पैसा ग्राम कोश में जमा करवाया जाता है। उस कोश से यहां पिछले दिनों दो छोटे—छोटे तालाब बनाए गए हैं।

गड़ा हुआ कोश किसी के हाथ लग जाए तो उसे अपने पर नहीं परोपकार में लगाने की परंपरा रही है। परोपकार का अर्थ प्रायः तालाब बनाना या उनकी मरम्मत करना माना जाता था। कहा जाता है कि बुंदेलखंड के महाराजा छत्रपाल के बेटे गड़े हुए खजानों के बारे में एक बीजक मिला था। बीजक की सूचना के अनुसार जगतराज ने खजाना खोद निकाला। छत्रपाल को पता चला तो बहुत नाराज हुए। ''मृतक द्रव्य चंदेल को, कयों तुम लियो उखार।' चंदेलों के बने सभी तालाबों की मरम्मत की जाये और नये तालाब बनवाए जाए।

खजाना बहुत बड़ा था। पुराने तालाबों की मरम्मत हो गयी और नये तालाब भी बनने शुरू हुए। वंश वृक्ष देखकर विक्रम संवत् 286 से 1162 तक की 22 पीढ़ियों के नाम पर पूरे 22 बड़े—बड़े तालाब बने थे। ये बुन्देलखंड में आज भी हैं।

गड़ा हुआ धन सबको नहीं मिलता। लेकिन सबको तालाब से जोड़कर देखने के लिए भी समाज में कुछ मान्यताएं रही हैं। अमावस और पूर्णिमा इन दो दिनों को कारज यानी अच्छी और वही सार्वजनिक कामों का दिन माना गया है। इन दोनों दिनों में निजी काम से हटने और सार्वजनिक काम से जुड़ने का विधान रहा है। किसान अमावस और पूर्णिमा को अपने खेत में काम नहीं करते थे। उस समय का उपयोग वे अपने क्षेत्र के तालाब आदि की देखरेख और मरम्मत में लगाते थे। समाज में श्रम भी पूंजी है और उस पूंजी को निजी हित के साथ सार्वजनिक हित में लगाये जाते थे। श्रम के साथ–साथ पूंजी का अलग से प्रबंध किया जाता रहा है। इस पूंजी की जरूरत पायः ठंड के बाद तालाब में पानी उतर जाने पर पड़ती है।

गर्मी का मौसम सामने खड़ा हो तो यही सबसे अच्छा समय है, तालाब में कोई बड़ी टूट–फूट पर ध्यान देने का। वर्ष की बारह पूर्णिमाओं में से ग्यारह पूर्णिमाओं को श्रमदान के लिए रखा जाता रहा है पर पूस माह की पूनों पर तालाब के लिए धन या पैसा एकत्र किये जाने की परंपरा रही है। छत्तीसगढ़ में उस दिन छेर–छेरा त्योहार मनाया जाता हैं छेर–छेरा में लोगों के दल निकलते हैं, घर–घर जाकर गीत गाते हैं और गृहस्थ से धान एकत्र करते हैं। धान की फसल कट कर घर आ चुकी होती है। हरेक घर अपने–अपने सामर्थ्य से धान का दान करता है। इस तरह जमा किया गया धान ग्राम कोश में रखा जाता है। इसी कोश से आने वाले दिनों में तालाब और अन्य सार्वजनिक स्थानों की मरम्मत और नये काम पूरे किए जाते हैं। सार्वजनिक तालाबों में तो सबका श्रम और पूंजी लगती ही थी, निहायत निजी किस्म के तालाबों में भी सार्वजनिक स्पर्श आवश्यक माना जाता रहा है। तालाब बनने के बाद उस इलाके के सभी सार्वजनिक स्थलों से थोड़ी–थोड़ी मिट्‌टी लाकर तालाब में डालने का चलन आज भी मिलता है। छत्तीसगढ़ में तालाब बनते ही उसमें घुड़साल, हाथीखाना, बाजार, मंदिर, शमशान भूमि, वेश्यालय, अखाड़ों और विद्यालयों की मिट्‌टी डाली जाती थी। शायद आज ज्यादा पढ़–लिख जाने वाले अपने समाज से कट जाते हैं लेकिन तब बड़े विद्या केन्द्रों से निकलने का अवसर तालाब बनवाने के प्रसंग में बदल जाता था। मधुबनी, दरभंगा क्षेत्र में यह परंपरा बहुत बाद तक चलती रही है।

तालाबों में प्राण हैं। प्राण प्रतिष्ठा का उत्सव बड़ी धूमधाम से होता था। उसी दिन उनका नाम रखा जाता था। कहीं–कहीं तामपत्र या शिलालेख पर तालाब का पूरा विवरण उकेरा जाता था। कहीं–कहीं तालाबों का पूरी विधि के साथ विवाह भी होता था। छत्तीसगढ़ में यह प्रथा आज भी जारी है। विवाह से पहले तालाब का उपयोग नहीं हो सकता, न तो उससे पानी निकालेंगे और न उसे पार करेंगें। विवाह में क्षेत्र के सभी लोग, सारा गांव पाल पर उमड़ आता है। आसपास के मंदिरों की मिट्‌टी लाई जाती है। गंगा जल आता है और इसी के साथ अन्य पांच या सांत कुंओ या तालाबों का जल मिलाकर विवाह पूरा होता है। कहीं–कहीं बनाने वाले अपने सामर्थ्य के हिसाब से दहेज तक का प्रबंध करते हैं।

विवाहोत्सव की स्मृति में भी तालाब पर स्तंभ लगाया जाता है। बहुत बाद में जब तालाब की सफाई–खुदाई दुबारा होती है तब भी उस घटना की याद में स्तंभ लगाने की परंपरा रही है।

आज बड़े शहर की परिभाषा में आबादी का हिसाब केन्द्र में है। पहले बड़े शहर या गांव की परिभाषा में उसके तालाबों की गिनती होती थी। कितनी आबादी का शहर या गांव है, इसके बदले पूछा जाता था कितने तालाबों का गांव है। छत्तीसगढ़ी में बड़े गांव के लिए कहावत है कि वहां ''छै आगर छै कोरी' यानी छह बीसी और छह अधिक, 120 और 6 यानी 126 तालाब होने चाहिए। आज के बिलासपुर जिले के मल्हार क्षेत्र में जो ईसा पूर्व

बसाया गया था, पूरे 126 तालाब थे। उसी क्षेत्र में रतनपुर (दसवीं से बारहवी शताब्दी) खरौदी (सातवीं से बारहवीं शताब्दी) रायपुर के आंरभ और कुबरा और सरगुजा जिले के दीपाडीह गांव मे आज आठ सौ हजार बरस बाद भी 100 कहीं–कहीं तो पूरे 126 तालाब गिने जा सकते हैं।

इन तालाबों के दीर्घ जीवन का एक ही रहस्य था ममत्व। यह मेरा है, हमारा है। ऐसी मान्यता के बाद रखरखाव जैसे शब्द छोटे लगने लगेंगे। भुजलिया के आठो अंग पानी में डूब सके इतना पानी ताल में रखना। ऐसी गीत गाने वाली, ऐसी कामना करने वाली स्त्रियां हैं तो उनके पीछे ऐसा समाज रहा है जो अपने कर्तव्य से इस कामना को पूरा करने का वातावरण बनाता था। घरगैल, यानी सब घरों के मेल से तालाब का काम होता था।

सबका मेल तीर्थ है, जो तीर्थ न जा सके, वे अपने यहां तालाब बना कर पुण्य ले सकते हैं। तालाब बनाने वाला पुण्यात्मा है, महात्मा है, जो तालाब बचाये उसकी भी उतनी ही मान्यता मानी गयी है। इस तरह का तालाब एक तीर्थ है, यहां मेले लगते हैं और इन मेलों में जुटने वाला समाज तालाब को अपनी आंखों में, मन में बसा लेता है।

तालाब समाज के मन में रहा है और कहीं–कहीं तो उसके तन में भी। बहुत से वनवासी समाज गुदने में तालाब, बावड़ी गुदवाते हैं। गुदनों के चिन्हों में पशु–पक्षी, फूल आदि के साथ–साथ सहरिया समाज में सीता बावड़ी और साधारण बावड़ी के चिन्ह भी प्रचलित हैं। सहरिया शबरी को अपना पूर्वज मानते हैं। सीताजी से विशेष संबंध है। इसलिए सहरिया अपनी पिंडलियों पर सीता बावड़ी बहुत चाव से गुदवाते हैं।

सीता बावड़ी में मुख्य आयत है। भीतर लहरे हैं। बीचो–बीच एक बिन्दु है जो जीवन का प्रतीक है। आयत के बाहर सीढ़ियां हैं और चारों कोनों पर फूल है और फूल में है जीवन की सुगंध। इतनी सब बातें एक सरल, सरस रेखाचित्र में उतार पाना कठिन है। लेकिन गुदना गोदने वाले कलाकार और गुदवाने वाले स्त्री–पुरूषों का मन तालाब, बावड़ी में इतना रमा रहा है कि आठ दस रेखाएं, आठ दस बिंदियां पूरे दृश्य को तन पर सहज ही उकेर देती हैं। यह प्रथा तमिलनाडु के दक्षिण आरकाट जिले के कुंराऊं समाज में भी है, जिसके मन में तन में तालाब

रहा हो, वह तालाब को केवल पानी के एक गड्‌डे की तरह नहीं देख सकेगा। उसके लिए तालाब एक जीवंत परंपरा है और उसके कई संबंध–संबंधी है। किस समय किसे याद करना है ताकि तालाब बना रहे इसकी भी उसे पूरी सुध है।

यदि समय पर पानी नहीं बरसे तो किस तरह गुहार पहुंचानी है? इंद्र हैं वर्षा के देवता, पर सीधे उनको खटखटाना कठिन है, शायद ठीक भी नहीं। उनकी बेटी है काजल, काजल माता तक अपना संकट पहुंचायें तो वे अपने पिता का ध्यान इस तरफ अच्छे से खींच सकेंगी। बोनी हो जाये और एक पखवाड़े तक पानी नहीं बरसे तो फिर काजल माता की पूजा होती है। पूरा गांव कांकड़बनी यानी गांव की सीमा पर लगे वन में बने तालाब तक पूजा गीत गाते हुए एकत्र होता है।

फिर दक्षिण दिशा की ओर मुंह करके सारा गांव काजल माता से पानी की याचना करता है। दक्षिण से ही पानी आता है। काजल माता को पूजने से पहले कई स्थानों में पवन परीक्षा भी की जाती है। यह आषाढ़ शुक्ल पूर्णिमा पर होती है। इस दिन तालाबों पर मेला लगता है और वायु की गति देखकर पानी की भविष्यवाणी की जाती है। उस हिसाब से पानी समय पर गिर जाता है न गिरे तो फिर काजल माता को बताना है।

तालाब का लबालब भर जाना भी एक बड़ा उत्सव बन जाता है। समाज के लिए इससे बड़ा और कौन सा प्रसंग होगा कि तालाब की अपरा चल निकलती है। भुज (कच्छ) के सबसे बड़े तालाब हमीरसर के घाट में बनी हाथी की एक मूर्ति अपरा चलने की सूचक है। जब जल इस मूर्ति को छू लेता है तो पूरे शहर में खबर फैल जाती थी।

शहर तालाब के घाटों पर आ जाता। कम पानी का इलाका इस घटना को एक त्यौहार में बदल लेता। भुज के राजा घाट पर आते और पूरे शहर की उपस्थिति में तालाब की पूजा करते और भरे तालाब का आशीर्वाद लेकर लौटते। तालाब का पूरा भर जाना सिर्फ एक घटना नहीं, आनंद है, मंगलसूचक है, उत्सव है, महोत्सव है। वह प्रजा और राजा को घाट तक ले आता है। इन्हीं दिनों देवता भी घाट पर आते हैं। जल झूलन त्यौहार में मदिरों की चल मूर्ति तालाब तक लाई जाती है और वहां पूरे श्रृंगार के साथ उन्हें झूला झुलाया जाता है। भगवान भी सावन के झूलों की पेंग का आनंद उठाते हैं।

कोई भी तालाब अकेला नहीं है। वह भरे–पूरे जल परिवार का एक सदस्य है। उसमें सबका पानी है और उसका पानी सब में है। ऐसी मान्यता रखने वालों ने एक तालाब सचमुच ऐसा ही बना दिया था। जगन्नाथपुरी के मंदिर के पास बिन्दुसागर में देश भर के हर जल स्रोत का, नदियों और समुद्रों तक का पानी मिला है। दूर–दूर से अलग–अलग दिशाओं से पुरी आने वाले भक्त अपने साथ अपने क्षेत्र का थोड़ा सा पानी ले आते हैं और उसे बिन्दुसागर में अर्पित कर देते हैं। देश की एकता की परीक्षा की इस घड़ी में बिन्दुसागर 'राष्ट्रीय एकता का सागर' कहला सकता है। बिन्दुसागर जुड़े भारत का प्रतीक है।

अनुपम मिश्र, प्रख्यात पर्यावरणविद्
रक्त सूर्य पत्रिका से साभार

''यह आलेख प्रख्यात पर्यावरणविद श्री अनुपम मिश्र जी का है जो अब हमारे बीच नहीं हैं। उन्होंने अपने समग्र विचार, लेख आदि को जन जागरण के लिए प्रचारित–प्रसारित करने हेतु कॉपीराइट मुक्त कर दिये थे।''

कुरूक्षेत्र ब्रह्मसरोवर के तट पर गीता महोत्सव के अवसर पर वन विभाग के प्रचार-प्रसार प्रभाग द्वारा आयोजित

गीता को सच्चे अर्थो में आत्मसात करने की कोशिश - जी. रमन

9 दिसम्बर 2021, ब्रह्मसरोवर, कुरूक्षेत्र

आजादी के अमृत महोत्सव के अवसर पर कुरूक्षेत्र ब्रह्मसरोवर के पवित्र घाट पर वन विभाग के प्रचार एवं प्रसार, प्रभाग द्वारा ''किताबें कहती हैं आ लौट चले प्रकृति की ओर'' विषय पर पर्यावरण प्रदर्शनी का आयोजन किया गया। पर्यावरण प्रदर्शनी का उद्घाटन करते हुए मुख्य वन संरक्षक श्री जी. रमन ने कहा कि आजादी के अमृत महोत्सव के अवसर पर गीता जयंती के उपलक्ष्य में आयोजित पुस्तक मेला परिसर में पर्यावरण प्रदर्शनी का आयोजन करना वास्तव में गीता को सच्चे अर्थो में आत्मसात करने की एक कोशिश है। उन्होंने कहा कि भगवद् गीता में भगवान कृष्ण कहते हैं कि समूचे ब्रह्माण्ड में मैं ही व्याप्त हूं और सृष्टि के समस्त पदार्थ मुझमें ऐसे जुड़े हैं जैसे हार में मोती। इस प्रकार पर्यावरण भी एक आभूषण है तथा वायु, जल, थल, वनस्पति आदि तत्व मोती। उन्होंने कहा कि ईश्वर द्वारा बनाये गये इस आभूषण का सौन्दर्य मनुष्य के अनैतिक क्रियाकलापों के कारण खत्म होता जा रहा है। अतः पर्यावरण के प्रति हमारा नैतिक कर्तव्य है कि हम इसकी रक्षा करें तथा इस आभूषण की पहुंची क्षति को ठीक करें।

विमर्श में हिस्सेदारी करते हुए वन संरक्षक सुश्री निवेदिता ने कहा कि ब्रह्मसरोवर हमारे आस्था का पवित्र स्थल है। यदि हम वास्तव में ईश्वर की आराधना करना चाहते हैं तो ईश्वर द्वारा प्रदत्त पांच तत्वों की आराधना करें क्योंकि भ से भूमि, ग से गगन, व से वायु, अ से अग्नि, तथा न से नीर। वास्तव में यहीं ईश्वर है जो जीवनदायिनी है। इस अवसर पर वन विभाग से प्रचार अधिकारी सरोज पवार, श्री तरूण कुमार, श्री राकेश, श्रीमती रीता राय सहित वन विभाग के प्रचार विंग के अधिकारी/कर्मचारी उपस्थित रहे।

वन हैं तो हम हैं...

10 दिसम्बर 2021, ब्रह्मसरोवर, कुरूक्षेत्र

गीता महोत्सव के अवसर पर प्रचार एवं प्रशिक्षण, वन विभाग हरियाणा द्वारा कुरूक्षेत्र विकास प्राधिकरण के सानिध्य में आयोजित प्रकृति रक्षा थीम पर ''वन हैं तो हम हैं'' कार्यशाला एवं विमर्श का आयोजन किया गया। कार्यशाला में विभिन्न स्कूल के विद्यार्थियों ने अपने भावों को संस्मरण तथा कहानी के माध्यम से प्रस्तुत किया। विमर्श के उपरांत विद्यार्थियों ने अपनी स्वयं की लिखी हुई रचना का सस्वर पाठ किया।

कार्यशाला की विषय विशेषज्ञ श्रीमती मनजीत कौर ने विद्यार्थियों को संबोधित करते हुए कहा कि ''ऋते ज्ञानात न मुक्ति'' अर्थात ज्ञान प्राप्त किये बिना मुक्ति नहीं मिल सकती और मानव द्वारा अर्जित ज्ञान तथा युगों से अर्जित किये जाने वाला ज्ञान प्रकृति तथा उसके रहस्यों तक ही सीमित है, अर्थात जब मनुष्य प्रकृति के व्यवस्था के ज्ञान को प्राप्त करने का प्रयास करेगा तो प्रकृति संरक्षण उसके जीवन का उद्देश्य बन जाएगा। ग्रन्थ अकादमी के श्री आशुतोष ने अपने विचार व्यक्त करते हुए कहा कि प्रकृति संरक्षण हमारे जीवन का अंग है परन्तु मनुष्य अपनी क्षणिक स्वार्थ के कारण प्रकृति का दुश्मन बनता जा रहा है। हमारा कल स्वच्छ और समृद्ध रहे, उसके लिए हमें आज ही जागरूक होना होगा। प्रचार अधिकारी सरोज पवार ने कहा 'वन हैं तो हम हैं' की उक्ति को यदि सही मायनों में आत्मसात कर ले तो प्रकृति संरक्षण में जो बाधा आ रही है वह समस्या स्वतः ही समाप्त हो जाएगी।

डिप्टी रेंजर श्री तरूण कुमार ने कहा कि हम चाहते हैं कि हमारी धरती बंजर न हो तो उसके लिए हमें ज्यादा से ज्यादा पौधे लगाना होगा तथा साथ ही उसका संरक्षण भी करना होगा। वन दरोगा श्री राकेश कुमार ने कहा है कि हमें पर्यावरण की शिक्षा बचपन से ही देनी होगी। उन्होंने कहा कि अपनी आने वाली पीढ़ी को यह एहसास कराना है कि पर्यावरण सुरक्षा ही वास्तव में असली जीवन जीने की सीख है।

यह प्रकृति रक्षा पदयात्रा प्रकृति संरक्षण हेतु 48 कोस के नागरिक समाज को प्रकृति रक्षा का सहयात्री बनायेगा - श्री अनुभव मेहता

11 दिसम्बर 2021, ब्रह्मसरोवर, कुरूक्षेत्र

मुख्य वन संरक्षक श्री जी. रमन के सानिध्य में आजादी के अमृत महोत्सव के अवसर पर कुरूक्षेत्र ब्रह्मसरोवर के पवित्र घाट पर वन विभाग के प्रचार एवं प्रसार, प्रभाग द्वारा आयोजित प्रदर्शनी स्थल से प्रकृति रक्षा पदयात्रा का आयोजन वन विभाग के प्रशिक्षुओं तथा मॉडल संस्कृति स्कूल के एन. सी. सी. कैडेट्स की संयुक्त भागीदारी से किया गया।

श्री अनुभव मेहता, सी. ई. ओ., कुरूक्षेत्र विकास बोर्ड ने प्रकृति रक्षा पदयात्रा को हरी झंडी दिखाकर रवाना किया। इस अवसर पर उन्होंने कहा कि ब्रह्मसरोवर के तट पर प्रत्येक वर्ग के लोग आ रहे हैं। इसलिए नागरिक अपील के रूप में यह मार्च 48 कोस के नागरिक समाज को प्रकृति रक्षा का सहयात्री बनायेगा। इस अवसर पर निर्मल नागर, संयुक्त परिवहन आयुक्त ने कहा कि लोगों को पर्यावरण संरक्षण हेतु जागरूक करने के लिए वन विभाग के प्रशिक्षु डिप्टी रेंजर तथा मॉडल संस्कृति स्कूल के एन सी सी कैडेट्स की भागीदारी से जो पद यात्रा संयोजित की गयी, वह तीर्थयात्रियों को प्रकृति रक्षा का संदेश दे रही है। वन मंडल अधिकारी प्रशिक्षण श्री अजय पाल ने कहा कि वन विभाग के प्रशिक्षुओं का नागरिक संवाद का अभिनव प्रयोग सामुदायिक हिस्सेदारी से वनाच्छादित हरियाणा के सपने को साकार करेगा।

प्रकृति संरक्षण हेतु आजादी के अमृत महोत्सव के अवसर पर कुरूक्षेत्र के ब्रह्मसरोवर के तट पर पद यात्रा करते हुए वन विभाग के प्रशिक्षु

ज्ञान के सभी मंदिरों में उपलब्ध कराया जाएगा पर्यावरण साहित्य - जी. रमन

12 दिसम्बर 2021, ब्रह्मसरोवर, कुरूक्षेत्र

गीता महोत्सव के अवसर पर वन विभाग के प्रचार–प्रसार प्रभाग द्वारा कुरूक्षेत्र विकास प्राधिकरण के सानिध्य में 'प्रकृति रक्षा में नागरिक दायित्व' विषय पर विमर्श एवं कार्यशाला का आयोजन किया गया। कार्यशाला में जिले भर से आये विद्यार्थियों ने कागज पर अपने सपनों का रंग उकेरा। सैकड़ों विद्यार्थियों ने निर्मित कलाकृतियों को तीर्थ यात्रियों के लिए विशेष प्रदर्शनी लगायी तथा पर्यावरण प्रदर्शनी के आयोजन स्थल से सभी विद्यार्थी तथा शिक्षकों ने वन विभाग के अधिकारियों/कर्मचारियों के साथ मिलकर मुख्य मंच तक पर्यावरण मार्च निकाला जिसका नेतृत्व प्रसिद्ध पर्वतारोही सुश्री अनीता कूंडू एवं संतोष दहिया ने किया।

प्रसिद्ध पर्वतारोही सुश्री अनीता कूंडू एवं संतोष दहिया विद्यार्थियों के साथ पर्यावरण संस्कार यात्रा की अगुवाई करते हुए।

प्रकृति द्वारा प्रदत्त आक्सीजन का कोई विकल्प नहीं... प्रकृति संरक्षण में नागरिक पत्रकारिता पर हुआ विमर्श

13 नवम्बर 2021, ब्रह्मसरोवर, कुरूक्षेत्र

आज 13 नवम्बर 2021 को ब्रह्मसरोवर के तट पर मुख्य वन संरक्षक श्री जी. रमन के संयोजन एवं सानिध्य में प्रचार–प्रसार प्रभाग द्वारा प्रकृति संरक्षण और नागरिक पत्रकारिता विषय पर विमर्श एवं कार्यशाला का आयोजन किया गया।

श्री अनुभव मेहता, सी.ई.ओ. कुरूक्षेत्र विकास बोर्ड एवं श्री निर्मल नागर, संयुक्त परिवहन आयुक्त प्रकृति रक्षा हेतु वन विभाग के प्रशिक्षुओं के साथ पद यात्रा करते हुए

ग्रीन मैन मंगा, यमुनानगर ने विद्यार्थियों नागरिकों के साथ किया पदयात्रा

ग्रीन मैन मंगा, यमुनानगर ने विद्यार्थियों, वन विभाग के अधिकारियों/कर्मचारियों तथा नागरिकों के साथ पूरे मेला परिसर में पदयात्रा की। उन्होंने ''वृक्ष लगाओ आक्सीजन पाओ, वन हैं तो हम हैं, वृक्ष हमारे पूर्वज हैं'' जैसे नारों के साथ पूरे मेला परिसर में भ्रमण किया तथा जन समुदाय से अपील करते हुए कहा कि यदि समय रहते हम नहीं संभले तो वो दिन दूर नहीं जब हमें स्कूल बैग के साथ–साथ ऑक्सीजन सिलेन्डर भी लेकर चलना होगा।

ग्रीन मैन मंगा द्वारा पर्यावरण संरक्षण की अपील करते हुए

कलाएं बनेगी प्रकृति रक्षा की आवाज - वी. एस. तंवर

पुस्तक मेले के आखिरी दिन वन विभाग द्वारा चित्रकला शिविर का हुआ आयोजन
अगले वर्ष फिर आयेंगे वादे के साथ अलबिदा किताबों की दुनिया

14 नवम्बर 2021 ब्रह्मसरोवर कुरूक्षेत्र

वन विभाग की पहल पर बह्मसरोवर के तट पर कुरूक्षेत्र विकास बोर्ड के सहयोग से ग्रन्थ अकादमी हरियाणा के सानिध्य में आयोजित पुस्तक मेले का समापन हुआ। समापन समारोह में 48 कोस परिक्षेत्र में संचालित स्वयं सहायता समूहों की महिलाओं ने हरित क्षेत्र बढ़ाने के लिए वादा किया और यह शपथ लिया कि अब हम सिर्फ पौधारोपण नहीं करेंगे बल्कि पहले से रोपे गये पौधों को संभाल कर वृक्ष बनायेंगे। इस अवसर पर मुख्य अतिथि के रूप में हरियाणा के तत्कालीन प्रधान मुख्य वन संरक्षक श्री वी. एस. तवर ने कहा कि हरि का अरण्य यानि भगवान का जंगल उसे फिर से वनाच्छादित हरियाणा में सामुदायिक हिस्सेदारी से स्थापित करेंगे। उन्होंने इस अवसर पर आयोजित ललित कला विभाग के विद्यार्थियों द्वारा निर्मित कलाकृतियों की भूरि–भूरि प्रशंसा की और उन्हें पारितोषिक देकर सम्मानित किया। उन्होंने कहा कि शिविर में निर्मित कलाकृतियां बहुत ही उत्कृष्ठ हैं। इन कलाकृतियों को वन भवन की दीवारों पर प्रदर्शित किया जाएगा। उन्होंने देश भर से आये प्रकाशकों के स्टाल से वन प्रशिक्षण केन्द्र पिंजौर और वन भवन की पुस्तकालय के लिए प्रकृति रक्षा के साहित्य को खरीदा। इस अवसर पर प्रख्यात चित्रकार डॉ. रामविरंजन, कुरूक्षेत्र के वन मंडल अधिकारी श्री रविन्द्र धनकड़ सहित वन विभाग के अधिकारी व कर्मचारी उपस्थित रहे।

चित्रकला कार्यशाला में विद्यार्थियों द्वारा निर्मित कलाकृतियों की एक झलक

प्रकृति संरक्षण हेतु ललित कला विभाग कुरूक्षेत्र विश्वविद्यालय के विद्यार्थियों द्वारा निर्मित कलाकृतियों की एक झलक

ऑक्सी वन

माननीय मुख्यमंत्री श्री मनोहर लाल जी ने ऑक्सी वन की परिकल्पना को सर्वप्रथम करनाल के पुरानी बादशाही नहर में बनाना सुनिश्चित किया ताकि नागरिकों को स्वस्थ रहने का वातावरण प्रदान किया जा सके, साथ ही हमारे जीवन को विभिन्न प्रकार के पेड़–पौधों और जड़ी–बूटियों के साथ पुराने संबंधों को जोड़ा जा सके। इस तरह का उद्यम करनाल शहर को स्मार्ट, स्वच्छ, हरित सतत और स्वस्थ करनाल शहर के रूप में विकसित करना है।

आक्सी वन के अन्तर्गत 14 तरह के घटक शामिल हैं जैसे चित वन, पक्षी वन, अंतरिक्ष वन, तपो वन, आरोग्य वन, नीर वन, ऋषि वन, स्मृति वन, सुगंध वन, एम्फीथिएटर, सूचना केन्द्र, पुस्तकालय, लाइट एंड साउंड शो, सोविनियर शॉप।

विश्व पर्यावरण दिवस के उपलक्ष्य में ऑक्सी वन करनाल में शिलान्यास समारोह के अवसर पर पौधारोपण करते माननीय मुख्यमंत्री श्री मनोहर लाल जी एवं माननीय वन एव वन्य जीव मंत्री श्री कंवर पाल जी

माननीय मुख्य मंत्री श्री मनोहर लाल जी एवं वन मंत्री श्री कंवर पाल जी एवं
सांसद श्री संजय भाटिया जी ऑक्सी वन क्षेत्र का निरीक्षण करते हुए

माननीय मुख्य मंत्री श्री मनोहर लाल जी एवं वन मंत्री श्री कंवर पाल जी ऑक्सी वन मॉडल का अवलोकन करते हुए

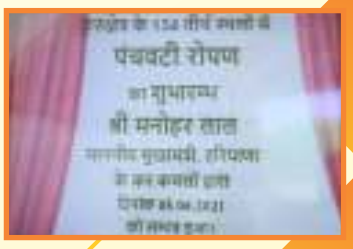

नेचर कैम्प थापली

वन विभाग हरियाणा द्वारा थापली में पहाड़ के किनारे प्रकृति दर्शन हेतु एक ऐसा ही 'नेचर कैंप' की स्थापना की गयी है। यहां से घग्गर नदी के बाढ़ के मैदानों तथा उत्तर में वनाच्छादित पिंजौर दून और हिमाचल की पहाड़ियां दिखायी देती हैं। कैंप में हरियाणा वन विभाग की नर्सरी है। कई इको–झोपड़ी, फ्रेंच/स्विस शैली के तंबू हैं, भोजन क्षेत्र एक छत वाली प्रभावशाली लकड़ी की संरचना है। इस शिविर में एक नव निर्मित स्वागत भवन को जोड़ा गया है। शिविर काफी ऊंचे तार–जाल की बाड़ के भीतर संलग्न है।

नेचर कैम्प थापली में माननीय राज्यपाल महोदय श्री बंडारू दत्तात्रेय जी को पुष्प गुच्छ देकर स्वागत करते हुए मुख्य वन संरक्षक श्री जी. रमन

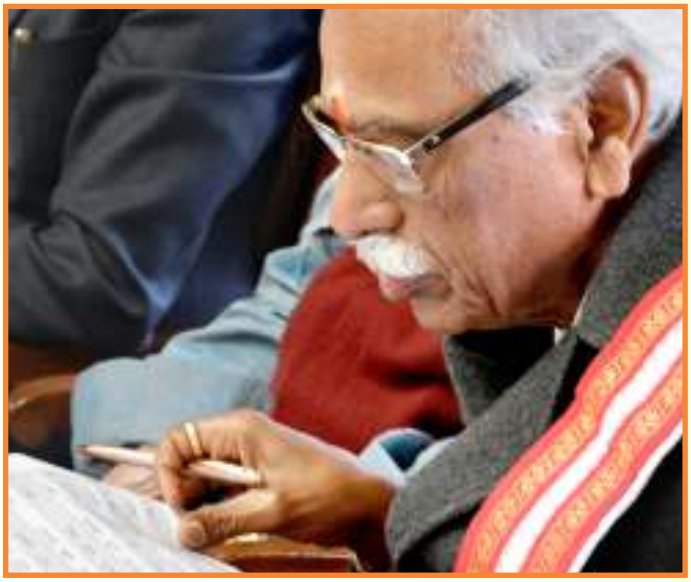

नेचर कैम्प थापली में माननीय राज्यपाल महोदय आगन्तुक रजिस्टर में अपने विचार अंकित करते हुए

माननीय राज्यपाल महोदय श्री बंडारू दत्तात्रेय नेचर कैम्प थापली परिसर का अवलोकन करते हुए

थापली वन क्षेत्र का मनोरम दृश्य

वन महोत्सव

72वें वन महोत्सव के अवसर पर एक साथ हरियाणा के सभी जिलों में अनूठे ढंग से युवाओ की भागीदारी सुनिश्चित करने का प्रयोग किया गया। हरियाणा के सभी जिला मुख्यालयों में जिला स्तरीय वन महोत्सव और यमुनानगर में राज्यस्तरीय वन महोत्सव का आयोजन किया गया। इस अवसर पर वर्चुवल मध्यम से उद्घाटन करते हुए माननीय मुख्यमंत्री श्री मनोहर लाल ने कहा कि युवा प्रकृति संरक्षण के वाहक बनेंगे। इस अवसर पर पूरे हरियाणा में 52 लाख विद्यार्थी वर्चुवल माध्यम से इस समारोह का हिस्सा बने। लोगों से संवाद करते हुए हरियाणा के वन एवं शिक्षा मंत्री माननीय श्री कंवर पाल ने कहा कि पेड़ों में देवों का वास होता है पेड़ों में ब्रह्म, विष्णु, महेश हैं।

72वें राज्यस्तरीय वन महोत्सव के अवसर पर माननीय मुख्यमंत्री हरियाणा श्री मनोहर लाल जी
विडियोकान्फ्रेन्सिंग के माध्यम से लोगों को संबोधित करते हुए

माननीय वन मंत्री हरियाणा श्री कंवरपाल जी पौधारोपण करते हुए

माननीय वन मंत्री हरियाणा श्री कंवरपाल जी धरोहर पुस्तिका का अनावरण करते हुए

72वें राज्यस्तरीय वन महोत्सव में वन प्रदर्शनी का अवलोकन करते हुए
माननीय वन मंत्री एवं प्रधान मुख्य वन संरक्षक

72वें राज्यस्तरीय वन महोत्सव के अवसर पर
माननीय वन मंत्री लोगों को संबोधित करते हुए

72वें राज्यस्तरीय वन महोत्सव समारोह में उपस्थित विशिष्ट अतिथि

72वें राज्यस्तरीय वन महोत्सव के अवसर पर
माननीय वन मंत्री श्री कंवर पाल जी विद्यार्थियों को रचनात्मक गतिविधि हेतु सम्मानित करते हुए

माननीय वन मंत्री श्री कंवर पाल जी विद्यार्थियों को सांस्कृतिक कार्यक्रम हेतु सम्मानित करते हुए

टिक्कर ताल

हरियाणा के पंचकूला जिले में मोरनी हिल्स स्थित है। राष्ट्रीय राजमार्ग 73 (चण्डीगढ़–देहरादून) तथा राष्ट्रीय राजमार्ग 22 (हिन्दुस्तान तिब्बत मार्ग, अंबाला से कौरिक) के क्रॉसिंग पर स्थित यह एक बहुत ही रमणीक स्थान है। यहां पर पुराने शासकों का एक छोटा सा किला व महल है। मोरनी हिल्स से थोडा आगे एक बड़ी झील भी है जिसका नाम टिक्कर ताल है।

टिक्कर ताल में पौधारोपण करते हुए माननीय राज्यपाल महोदय श्री बंडारू दत्तात्रेय

टिक्कर ताल में नौकाविहार करते हुए माननीय राज्यपाल महोदय श्री बंडारू दत्तात्रेय

राज्य स्तरीय वन्य प्राणी सुरक्षा सप्ताह

07 अक्टूबर 2021, नागक्षेत्र सफीदो, जिला जींद

वनस्पतियों एवं जीवों की सुरक्षा एवं संरक्षण के लिए वन्य प्राणी सुरक्षा सप्ताह (2 अक्टूबर से 8 अक्टूबर) प्रतिवर्ष आयोजित किया जाता है। इस वर्ष सफीदों नागक्षेत्र जींद में वन्य प्राणी सुरक्षा सप्ताह का आयोजन किया गया। जिसमें मुख्य अतिथि के रूप में श्री वी. एस. तंवर, तत्कालीन प्रधान मुख्य वन संरक्षक, वन एवं वन्य जीव विभाग हरियाणा और श्री जगदीश चन्द्र, तत्कालीन मुख्य वन्य जीव प्रतिपालक, वन एवं वन्य जीव विभाग हरियाणा ने हिस्सा लिया।

श्री जगदीश चन्द्र, तत्कालीन मुख्य वन्य जीव प्रतिपालक, वन एवं वन्य जीव विभाग हरियाणा लोगों को सम्बोधित करते हुए

श्री जगदीश चन्द्र, तत्कालीन मुख्य वन्य जीव प्रतिपालक, वन एवं वन्य जीव विभाग हरियाणा पौधारोपण करते हुए

कार्यक्रम के दौरान मंचासीन अतिथि

श्री एम एस मलिक, भा.व.से. पौधारोपण करते हुए

कार्यक्रम के दौरान संबोधित करते हुए विशेषज्ञ

प्रकृति प्रशिक्षण, भ्रमण एवं जागरूकता शिविर

प्रकृति प्रशिक्षण, भ्रमण एवं जागरूकता शिविर का एक दृश्य

पेड़ प्रकृति की अनुपम देन है पेड़ एक बहुमूल्य सम्पदा है। इन्हे हरा सोना भी कहा जाता है जहां पर पेड़ अधिक मात्रा में होते हैं वहां की जलवायु स्वच्छ और सुन्दर होती है अगर लगातार हम इसका दोहन करते रहे तो यह सम्पदा जल्द ही समाप्त हो जाएगी फिर हमारा जीवन भी समाप्त हो जाएगा। हमें वृक्षों की महत्ता को समझना ही होगा क्योंकि ये सम्पूर्ण प्रकृति के रक्षक हैं जब तक वह पृथ्वी पर विद्यमान हैं तब तक पृथ्वी पर जीवन है इनके बिना पृथ्वी सिर्फ एक सूखा और बंजर ग्रह बन जाएगा। आज बढ़ते हुए शहरीकरण और हमारे थोड़े से स्वार्थ के कारण पेड़ों की संख्या कम हो गई है जिसका बदलाव आप देख सकते हैं कि पृथ्वी का तापमान बढ़ रहा है और वातावरण भी असंतुलित हो गया है। इसलिए हमें आज और अभी से जागरूक होकर वृक्षों की संख्या में लगातार वृद्धि करनी ही पड़ेगी, इसलिए हमें पौधारोपण को बढावा देना चाहिए क्योंकि यह पर्यावरण को स्वस्थ रखता है और पारिस्थितिक संतुलन भी बनाए रखता है। सरकार और आमजन को पौधारोपण की प्रक्रिया को प्रोत्साहन करने के लिए संयुक्त प्रयास करना अनिवार्य है।

वनीकरण राष्ट्र की अर्थव्यवस्था को बढ़ावा देते है, क्योंकि जंगलों में कच्चे माल और विभिन्न अन्य वस्तुओं की आपूर्ति होती है जिसका वाणिज्यिक उपयोग होता है। यह मिट्टी के कटाव को भी रोकता है और पानी के सुधार की सुविधा प्रदान करता है। अधिक पेड़ लगाने से हवा में आक्सीजन का स्तर बढ़ता है, लोग ताजी हवा में सांस लेने में सक्षम होते है और स्वस्थ रहते हैं। इस तरह वनीकरण से जुड़े कई अन्य लाभ है। वनीकरण बढ़ाने और उसका संरक्षण के मध्येनज़र रखते हुऐ वन विभाग द्वारा राज्य के विभिन्न स्कूलों में प्रश्नोत्तरी प्रतियोगिता का आयोजन किया गया। इस आयोजन के तहत प्रति स्कूल से 100 बच्चों ने प्रश्नोत्तरी प्रतियोगिता में भागीदारी निभायी। सभी प्रश्नों को वन, जंगल, वन्य प्राणियों के संरक्षण एवं संवर्धन से सम्बन्धित रखा गया। प्रतियोगिताओं में अव्वल आने वाले छात्रों को सम्मानित किया गया और वन सम्बन्धित प्रचार सामग्री भी बच्चों में वितरित की गई।

राज्य के सभी स्कूलों की मुख्य अध्यापक/अध्यापिका और अन्य सभी शिक्षक जगत से छात्रों को वर्ष के अन्य दिनों में भी सभागार के समय पौधारोपण, वन एवं वन्य प्राणियों के संरक्षण के बारे में सूचित कराने के लिए आग्रह किया जाता है ताकि यह सन्देश बच्चों के मानस पटल पर लम्बे समय तक रहें तथा आज की पीढ़ी को उसके समय के पर्यावरण से साक्षात्कार कराया जा सके। इस तरह की प्रतियोगिता आयोजित कराने का उद्देश्य पर्यावरण से संबंधित समस्या को विद्यार्थियों से रूबरू कराना है क्योंकि जब विद्यार्थी समूह पर्यावरण से संबंधित प्रश्नों से साक्षात्कार करेंगे तभी उसके समाधान के प्रति गंभीर होंगे। इन्हीं सभी उद्देश्यों की पूर्ति हेतु वन विभाग की प्रचार एवं प्रशिक्षण टीम राज्य के स्कूलों को चयनित कर वन नीतियों का प्रचार एवं प्रसार करती है। इन कार्यक्रमों के आयोजन में वन विभाग की टीमों द्वारा विद्यार्थियों/नागरिकों के लिए पौष्टिक भोजन की व्यवस्था की जाती है। अतः हमें आज से ही वृक्षारोपण जैसे कार्यक्रमों का आयोजन करके अधिक से अधिक लोंगो को इस अभियान का हिस्सा बनाने के लिए प्रेरित करना चाहिए।

वन अग्नि सुरक्षा जागरूकता अभियान

वन हमें जीवन देते हैं, वन सदियों से हमारी मूलभूत आवश्यकताओं को पूरा करते हैं। वन बारिश कराने, छाया तथा भूमि कटाव को रोकने तथा वन्य जीवों को आश्रय भी प्रदान करते हैं, परन्तु गर्मियां आते ही वनों में आग लगने की घटनाएं बढ़ जाती हैं। कई बार नासमझी के कारण वन आग की भेंट चढ़ जाते हैं जिससे देखते–देखते हरे–भरे पेड़ स्वाहा हो जाते हैं और उनके साथ–साथ हजारों वन्य प्रजातियां भी नष्ट हो जाती हैं।

वन एवं वन्य जीव हम सबके हैं। इन सबको बचाना हम सबका कर्तव्य है। इसलिए वन विभाग के क्षेत्रीय अमले के सहयोग से प्रचार एवं प्रशिक्षण विंग द्वारा अप्रैल माह में वन अग्नि सुरक्षा अभियान चलाया गया। मोरनी, पंचकूला, रायपुररानी, पिंजौर, कालका, नारायणगढ़, साढौरा, कलेसर, छछरौली व जगाधरी रेंज में 71 गांव के करीब 700 लोगों को नुक्कड़ सभा तथा स्लोगन लिखित कट आउट व प्रचार सामग्री के माध्यम से वन अग्नि सुरक्षा हेतु जागरूक किया गया।

वन अग्नि सुरक्षा हेतु आमजन को जागरूक करता वन विभाग का वाहन

विभिन्न मानवीय क्रियाकलाप द्वारा वन में आग की वजह

वन की आग बुझाते हुए वन विभाग के कर्मचारी

वन में लगी आग का एक दृश्य

नाटक से नवजागरण

वन विभाग हरियाणा नागरिको को प्रकृति संरक्षण के लिए जागृति करने हेतु नाटक को माध्यम बनाया क्योंकि नाटक नवजागरण का सशक्त माध्यम है, नाटक एक ऐसी विधा है जो समाज के हर आयु वर्ग के लोगों को जागृत करती है इसलिए वन विभाग द्वारा प्रकृति रक्षा में नागरिक भागीदारी को बढ़ाने के लिए ''आओ वृक्ष दूत बने'' विषय पर नाट्य प्रस्तुति के माध्यम से जन जागरण अभियान चलाया गया। इस अभियान में लगभग तीन लाख विद्यार्थियों/शिक्षकों/नागरिकों ने हिस्सेदारी निभायी।

रा.क.मा.वि. रेवाड़ी में नाट्य मंचन का दृश्य

रा.क.व.मा.वि. यमुना नगर में नाट्य मंचन का दृश्य

रा.प्रा.वि. रोहतक में नाट्य मंचन का दृश्य

रा.मा.व.मा.वि. महेन्द्रगढ़ में नाट्य मंचन का दृश्य

रा.मा.व.मा.वि. पलवल में नाट्य मंचन का दृश्य

पर्यावरण संरक्षण हेतु वन विभाग द्वारा संयोजित गतिविधियाँ

वन विभाग हरियाणा आम नागरिकों के मध्य पर्यावरण संरक्षण में जन भागीदारी की भूमिका को सुनिश्चित करने के लिए समय–समय पर जागरूकता अभियान संयोजित करती रहती है जैसे किसान संवाद हेतु कार्यशाला का आयोजन, विद्यार्थियों के लिए पर्यावरण से संबंधित प्रश्नोत्तरी प्रतियोगिता, नाट्य प्रस्तुति, फिल्म प्रदर्शन/डोक्यूमेंट्री प्रदर्शन, पुराने वृक्षों को संरक्षित करने हेतु पेन्शन योजना, ऑक्सीवन, पंचवटी, अग्नि सुरक्षा सप्ताह, वन्य प्राणी सप्ताह, पर्यावरण दिवस आदि।

विश्व ओजोन दिवस के अवसर पर प्रचार अधिकारी सरोज पवार विद्यार्थियों को सम्बोधित करते हुए

प्रकृति प्रशिक्षण कार्यशाला में उपस्थित विद्यार्थी को सम्मानित करते शिक्षकगण

प्रकृति संरक्षण कार्यशाला के उपरांत विद्यार्थियों के भोजन ग्रहण का दृश्य

किसान जागरूकता शिविर में वन विभाग के अधिकारी मित्र खेती के लिए किसानों को प्रोत्साहित करते हुए

महिला शशक्तिकरण के लिए स्वयं सहायता समूह की महिलाओं के लिए आयोजित कार्यशाला का दृश्य

वन विभाग के अधिकारी/कर्मचारी नागरिकों को प्रकृति संरक्षण पत्रिका के द्वारा जागरूक करते हुए

विश्व आर्द्रता दिवस के अवसर पर राष्ट्रीय समारोह का आयोजन

सुल्तानपुर राष्ट्रीय उद्यान, गुरूग्राम (2 फरवरी, 2022)

आर्द्रभूमि का अर्थ है नमी या दलदल क्षेत्र अथवा पानी से संतृप्त (सेचुरेटेड) भूभाग को आर्द्रभूमि कहते हैं। कई भूभाग वर्ष भर आर्द्र रहते हैं। जैव विविधता की दृष्टि से आर्द्रभूमि अत्यंत संवेदनशील होती है। ईरान के रामसर शहर में कन्वेंशन के अनुसार आर्द्रभूमि उस स्थान को माना जाता है जहाँ वर्ष के आठ माह पानी भरा रहता है। आर्द्रभूमि की मिट्टी, झील, नदी, विशाल तालाब के किनारे का हिस्सा होता है जहाँ भरपूर नमी पाई जाती है। इसके कई लाभ भी हैं। आर्द्रभूमि जल को प्रदूषण से मुक्त बनाती है।

विश्व वेटलैंड दिवस 02 फरवरी 2022 को **''सुल्तानपुर राष्ट्रीय उद्यान''** में मनाया गया। विश्व वेटलैंड दिवस की 'विषय वस्तु' (Theme) "Wetlands Action for People and Nature" है, जिसकी महत्ता सुल्तानपुर राष्ट्रीय उद्यान (आर्द्रभूमि) को संरक्षित करने में विभिन्न समुदायों और नागरिकों की महत्वपूर्ण भूमिका पर ध्यान केन्द्रित करने में भी लागू होती है।

इस अवसर पर भारत सरकार के केन्द्रीय मंत्री, वन एवं पर्यावरण श्री भूपेन्द्र यादव जी, मुख्यमंत्री हरियाणा श्री मनोहर लाल जी, भारत सरकार के राज्य मंत्री श्री अश्विनी चौबे जी हरियाणा सरकार के वन एवं शिक्षा मंत्री श्री कंवर पाल जी, वन विकास निगम के अध्यक्ष श्री धर्मपाल गोदर जी, अतिरिक्त मुख्य सचिव श्री एस.एन. राय, महानिदेशक वन भारत सरकार श्री पी. सी. गोयल, प्रधान मुख्य वन संरक्षक श्री जगदीश चन्द्र सहित वन विभाग के अधिकारी, कर्मचारी, मीडियाकर्मी, नागरिक, विद्यार्थी उपस्थित रहे।

दृश्य 1 : विश्व आर्द्रता दिवस के अवसर पर आयोजित राष्ट्रीय समारोह में शिरकत करते हुए केन्द्रीय वन एवं पर्यावरण मंत्री श्री भुपेन्द्र यादव जी, मुख्यमंत्री हरियाणा श्री मनोहर लाल जी, केन्द्रीय राज्य मंत्री श्री अश्विनी चौबे जी, वन एवं शिक्षा मंत्री श्री कंवर पाल जी

दृश्य 2 : मंचासीन गड़मान्य व्यक्तियों के साथ मीडियाकर्मी, नागरिक व विद्यार्थी

सतपुड़ा के जंगल

सतपुड़ा के घने जंगल
नींद में डूबे हुए से,
ऊंघते अनमने जंगल।

झाड़ ऊंचे और नीचे,
चुप खड़ें हैं आंख मींचे,
घास चुप है, कस चुप है,
मूक शाल, पलाश चुप है।

बन सके तो धसों इनमें,
धंस न पाती हवा जिन में,
सतपुड़ा के घने जंगल,
ऊंघते अनमने जंगल।

धंसों इनमें डर नहीं है,
मौत का यह घर नहीं है,
उतर कर बहते अनेकों,
कल–कथा कहते अनेकों,
नदी, निर्झर और नाले,
इन वनों के गोद पाले।

भवानी प्रसाद मिश्र

नीली चिड़िया

वह चिड़िया जो
चोंच मार कर
दूध भरे जुण्डी के दाने
रूचि से, रस से खा लेती है
वह छोटी संतोषी चिड़िया
नीले पंखों वाली मैं हूँ
मुझे अन्न से बहुत प्यार है।

वह चिड़िया जो
कण्ठ खोल कर
बूढ़े वन–बाबा की खातिर
रस उड़ेल कर गा लेती है
वह छोटी मुंह बोली चिड़िया
नीले पंखों वाली मैं हूँ
मुझे विजन से बहुत प्यार है।

वह चिड़िया जो
चोंच मार कर
चढ़ी नदी का दिल टटोल कर
जल का मोती ले जाती है
वह छोटी गरबीली चिड़िया
नीले पंखों वाली मैं हूँ
मुझे नदी से बहुत प्यार है।

केदार नाथ अग्रवाल

Copyright:
(desktopbackground.org)

बादल को घिरते देखा है

अमल धवलगिरी के शिखरों पर
बादल को घिरते देखा है
छोटे–छोटे मोती जैसे
उसके शीतल तुहिन कणों को
मानसरोवर के उन स्वर्णिम
कमलों पर गिरते देखा है.....
तुंग हिमालय के कंधों पर
छोटी–बड़ी कई झीलें हैं
उनके श्यामल–नील सलिल में
समतल देशों से आ–आकर
पावस की ऊमस से आकुल
तिक्त–मधुर बिस तंतु खोजते
हंसों को तिरते देखा है
बादल को घिरते देखा है.....
ऋतु बसंत का सुप्रभात था
मंद–मंद था अनिल बह रहा
बालारूण की मृदु किरणें थीं
अगल–बगल स्वर्णाभ शिखर थे
एक दूसरे से विरहित हो
अलग–अलग रह कर ही
जिनको

सारी रात बितानी होगी
निशाकाल के चिर–अभिशापित
बेबस उन चकवा–चकई का
बंद हुआ क्रंदन, फिर उनमें
उस महान सरवर के तीरे
शैवालों की हरी दरी पर
प्रणय कलह छिड़ते देखा है
बादल को घिरते देखा है.....
दुर्गम बर्फानी घाटी में
शत–सहत्र फुट ऊंचाई पर
अलख नाभि से उठने वाले
निज के ही उन्मादक परिमल
के पीछे धावित हो होकर
तरल तरूण कस्तूरी मृग को
अपने पर चिढ़ते देखा है
बादल को घिरते देखा है.....
शत–शत निर्झर–निर्झरिणी कल
मुखरित देवदारू–कानन में
शोणित–धवल–भोजपत्रों से
छाई हुई कुटी के भीतर

रंग–बिरंगे और सुगंधित
फूलों से कुंतल को साजे
इन्द्रनील की माला डाले
शंख–सरीखे सुघड़ गलों में
कानों में कुवलय लटकाये
शतदल लाल कमल वेणी से
रजत–रचित मणि–खचित
कलामय
पानपात्र द्राक्षासव–पूरित
रखे सामने अपने–अपने
लोहित चंदन की त्रिपटी पर
मृगशालों पर पल्थी मारे
मदिरारूण आंखों वाले उन
उन्मद किन्नर किन्नरियों की
मृदुल मनोरम अंगुलियों का
वंशी पर फिरते देखा है
अमल धवलगिरी के शिखरों पर
बादल को घिरते देखा है.....

नागार्जुन

समाचार पत्रों की कतरन से....

What is Haryana scheme for 'pension' for trees, 'oxygen forests' to avoid shortages in future

TRICITY GETS DOWN TO EARTH

Hry CM inaugurates O2 park

PGI celebrates Environment Day

Principals get eco awards

प्रदेश में एक साल में लगाए जाएंगे 3 करोड़ पौधे, पंचा
लाख एकड़ भूमि का 10 प्रतिशत पर होगा पौधारोपण:मन

75 साल से ऊपर के वृक्ष के रखरखाव के लिए 2500 रुपये प्रतिवर्ष दी जाएगी पेंशन, हर गांव में पंचवटी के नाम

दैनिक ट्रिब्यून, चंडीगढ़, रविवार, 6 जून, 2021 2

पर्यावरण दिवस मुख्यमंत्री खट्टर ने करनाल से की ऑक्सी वन मॉडल की शुरुआत

75 साल से ऊपर के वृक्ष के संरक्षण के लिए प्राण वायु देवता पेंशन योजना शुरू

जागरण सिटी यमुनानगर

अंगूठी नहीं पहनता फिर भी राशि के हिसाब से लगाया पौधा : कंवरपाल

72वां राज्य स्तरीय वन महोत्सव का आगाज, मंत्री बोले- राशि के अनुसार पौधे लगाने से लाभ जरूर मिलता है

Khattar asks people to take 'green pledge' to plant at least one tree in their lifetime

सीएम ने की पेड़ लगाने की अपील, ई-पौधशाला मोबाइल एप लॉन्च

'व्यक्ति अपने जीवन में कम से कम एक पेड़ लगाने का संकल्प ले : मनोहर लाल'

मोरनी

पर्यटन स्थल मोरनी में सुविधाओं के बढ़ने के बाद बढ़ रही है सैलानियों की संख्या

सैलानियों ने किया मोरनी का रुख, होटल हुए फुल

फिलीपींस की तर्ज पर पौधे लगाने पर छात्रों को मिलेंगे 10 नंबर अतिरिक्त

योजना

- विद्यार्थियों को पौधारोपण अभियान से जोड़ने पर मंथन कर रही सरकार
- प्रदेश के 134 तीर्थों में पंचवटी वाटिका की शुरुआत

उल्लुओं को शिकार से बचाने को ड्रोन से निगरानी करेगा वन्य प्राणी विभाग

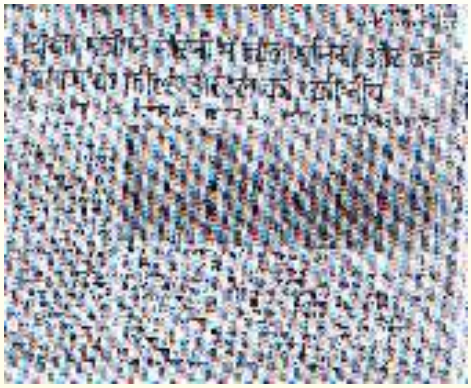

पक्षियों की आवाज से होगी उनकी पहचान, रिटायर्ड आईएफएस करेंगे बर्ड्स की वॉयस रिकॉर्डिंग, तैयार करेंगे इनकी लिस्ट

गीता महोत्सव के अवसर पर कुरुक्षेत्र के ब्रह्मसरोवर के पावन तट पर
सान्ध्यकालीन आरती करते हुए माननीय राज्यपाल महोदय श्री बंडारू दत्तात्रेय

माननीय मुख्य मंत्री महोदय द्वारा
स्कूली बच्चों को पौधा वितरण

“वन है तो जल है। जल है तो कल है”

प्रचार एवं प्रशिक्षण परिमण्डल, पंचकूला

वन एवं वन्य जीव विभाग, हरियाणा, पंचकूला

फोन : 0172-2565398

Designed & Printed at **THREE ARROWS**, Chd.
Ph.: 0172-5034154, 2922764, 98147 24514